RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 286
दि. 17.02.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मतदाता सूची विवाद पर चुनाव आयोग का बड़ा प्रहार, सात अधिकारी निलंबित, बंगाल की राजनीति में मचा भूचाल

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल की चुनावी प्रक्रिया के बीच मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण कार्य में कथित अनियमितताओं को लेकर भारत निर्वाचन आयोग ने अभूतपूर्व कार्रवाई करते हुए सात अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। यह कदम न केवल प्रशासनिक व्यवस्था के लिए एक कड़ा संदेश है, बल्कि राज्य की सियासत में भी तीव्र हलचल का कारण बन गया है। आयोग ने इन अधिकारियों पर गंभीर कदाचार के आरोपों को प्रथम दृष्टया सही मानते हुए राज्य की मुख्य सचिव को उनके खिलाफ तत्काल विभागीय अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने का निर्देश दिया है। आयोग द्वारा जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 13सीसी के तहत की गई यह कार्रवाई इस बात का संकेत है कि चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता और विश्वसनीयता को लेकर आयोग किसी भी प्रकार की ढिलाई बरतने के पक्ष में नहीं है।

सूत्रों के अनुसार, निलंबित किए गए सभी अधिकारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (Special Intensive Revision) प्रक्रिया में सहायक मतदाता पंजीकरण अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। इनका दायित्व मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने, पुराने नाम हटाने और दस्तावेजों के सत्यापन की प्रक्रिया को निष्पक्ष और सटीक तरीके से पूरा करना था। लेकिन आयोग को मिली शिकायतों और प्रारंभिक जांच में पाया गया कि इन अधिकारियों ने दस्तावेजों के सत्यापन में गंभीर लापरवाही बरती और कई संदिग्ध दस्तावेजों को स्वीकार कर लिया। यह आरोप भी सामने आया कि कुछ मामलों में बिना पर्याप्त प्रमाण के मतदाता सूची में नाम जोड़े गए, जिससे चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता पर सवाल खड़े हो गए।

इस कार्रवाई के बाद राज्य की राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी ने इस कदम का स्वागत करते हुए इसे लोकतंत्र की रक्षा के लिए आवश्यक बताया है। पश्चिम बंगाल

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और भाजपा के वरिष्ठ नेता सुवेंदु अधिकारी ने इस कार्रवाई को ऐतिहासिक करार देते हुए कहा कि यह पहली बार है जब चुनाव आयोग ने अपने संवैधानिक अधिकारों का उपयोग करते हुए सीधे अधिकारियों को दंडित किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार के प्रभाव में आकर कुछ अधिकारियों ने मतदाता सूची में फर्जी नाम जोड़ने का प्रयास किया, जिससे चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता प्रभावित हो सकती थी। अधिकारी ने यह भी चेतावनी दी कि यदि राज्य सरकार दोषी अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं करती है, तो आयोग के पास उनके खिलाफ आपराधिक मुकदमा दर्ज कराने का अधिकार भी है।

सुवेंदु अधिकारी ने यह भी आरोप लगाया कि मतदाता सूची के सत्यापन के दौरान फर्जी स्कूल प्रमाणपत्र, पैन कार्ड और नोटरी हलफनामों को स्वीकार किया गया। उनके अनुसार, यह सब राजनीतिक दबाव में किया गया और इसका उद्देश्य मतदाता सूची में हेरफेर करना था। उन्होंने यह भी कहा कि बंगाल में चुनाव आयोग से संबंधित फाइलें मुख्य सचिव के कार्यालय के बजाय सीधे मुख्यमंत्री के पास भेजी जाती हैं, जो प्रशासनिक प्रक्रिया की पारदर्शिता पर गंभीर सवाल खड़ा करता है। उन्होंने दावा किया कि अन्य राज्यों में इस प्रकार का हस्तक्षेप नहीं देखा जाता और यह स्थिति लोकतांत्रिक परंपराओं के खिलाफ है। वहीं दूसरी ओर, सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने आयोग की इस कार्रवाई पर कड़ा विरोध जताया है और इसे राजनीतिक रूप से प्रेरित बताया है। पार्टी के नेताओं का कहना है कि निलंबित अधिकारियों ने केवल अपने कर्तव्यों का पालन किया और उन्हें इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि उन्होंने कथित रूप से आयोग के कुछ अनुचित निर्देशों का पालन करने से इनकार कर दिया था। पार्टी के आईटी सेल प्रमुख ने आरोप लगाया कि आयोग भाजपा शासित राज्यों से माइक्रो ऑब्जर्वर भेजकर मतदाता सूची में बदलाव करने का प्रयास कर रहा था, जिसका इन अधिकारियों ने विरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि यह कार्रवाई राज्य सरकार को बदनाम करने की एक साजिश का हिस्सा है। इस पूरे घटनाक्रम ने राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सरकार और केंद्र की संस्थाओं के बीच पहले से मौजूद तनाव को और बढ़ा दिया है। तृणमूल कांग्रेस ने इस मामले को लेकर भारत का सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा भी खटखटाया है और आयोग की कार्रवाई को चुनौती दी है। पार्टी का कहना है कि आयोग को निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से कार्य करना चाहिए और किसी भी प्रकार के राजनीतिक दबाव से मुक्त रहना चाहिए।

निलंबित अधिकारियों में मुर्शिदाबाद जिले से तीन, दक्षिण 24 परगना से दो, और पूर्व मेदिनीपुर तथा जलपाईगुड़ी से एक-एक अधिकारी शामिल हैं। इनमें डॉ. सफी उर्रहमान, नीतीश दास, डालिया रे चौधरी, एसके मुर्शिद आलम, सत्यजीत दास, जॉयदीप कुंडू और देबाशीष बिस्वास जैसे अधिकारी शामिल हैं, जो विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में सहायक मतदाता पंजीकरण अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। आयोग ने राज्य की मुख्य सचिव नंदिनी चक्रवर्ती को निर्देश दिया है कि वे इन अधिकारियों के खिलाफ तत्काल विभागीय जांच शुरू करें और उसकी रिपोर्ट आयोग को सौंपें। चुनाव आयोग की इस कार्रवाई को प्रशासनिक जवाबदेही और चुनावी पारदर्शिता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि मतदाता सूची चुनावी प्रक्रिया की आधारशिला होती है और उसमें किसी भी प्रकार की अनियमितता लोकतंत्र की विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकती है। इसलिए आयोग द्वारा इस प्रकार की सख्त कार्रवाई यह संदेश देती है कि चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।

राजनीतिक विश्लेषकों का यह भी मानना है कि इस घटना का प्रभाव आगामी चुनावों पर भी पड़ सकता है। इससे प्रशासनिक अधिकारियों के बीच जवाबदेही की भावना मजबूत होगी और वे अपने कर्तव्यों का पालन अधिक सतर्कता और पारदर्शिता के साथ करेंगे। साथ ही, यह कार्रवाई राजनीतिक दलों के बीच चुनावी प्रक्रिया को लेकर विश्वास और संदेह दोनों को बढ़ाने का कारण बन सकती है।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता अत्यंत आवश्यक है। चुनाव आयोग की सख्ती यह दर्शाती है कि वह अपने संवैधानिक दायित्वों के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है और किसी भी प्रकार की अनियमितता को बर्दाश्त नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें राज्य सरकार की कार्रवाई और सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर टिकी हैं, जो इस मामले की दिशा और परिणाम को तय करेगा।

दहशत फैलाने की साजिश नाकाम: अहमदाबाद और वडोदरा के 34 स्कूलों को मिली बम की धमकी

(जीएनएस)। अहमदाबाद और वडोदरा जैसे शांत और विकसित शहरों में उस समय हड़कंप मच गया जब एक ही दिन में कुल 34 स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी भरे ईमेल प्राप्त हुए। इस घटना ने न केवल स्कूल प्रशासन और अभिभावकों को चिंता में डाल दिया, बल्कि सुरक्षा एजेंसियों को भी तत्काल हरकत में आने के लिए मजबूर कर दिया। हालांकि गहन जांच और सुरक्षा अभियान के बाद यह स्पष्ट हो गया कि यह धमकी पूरी तरह से फर्जी थी, लेकिन इस घटना ने एक बार फिर साइबर माध्यमों से फैलाए जा रहे डर और अफवाहों के खतरे को उजागर कर दिया। यह घटना सोमवार सुबह उस समय सामने आई जब अहमदाबाद और वडोदरा के कई प्रतिष्ठित स्कूलों के ईमेल आईडी पर धमकी भरे संदेश पहुंचे। इन संदेशों में दावा किया गया था कि स्कूल परिसरों में बम लगाए गए हैं और तय समय पर विस्फोट किया जाएगा। जैसे ही स्कूल प्रशासन को इस धमकी की जानकारी मिली, तुरंत स्थानीय पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों को सूचित किया गया। प्रशासन ने बिना किसी जोखिम के सभी स्कूलों को तत्काल खाली कराने का निर्णय लिया, जिससे हजारों छात्रों और शिक्षकों को सुरक्षित बाहर निकाला गया।

धमकी मिलने के बाद दोनों शहरों में सुरक्षा एजेंसियों ने बड़े पैमाने पर जांच अभियान शुरू किया। बम निरोधक दस्ता (बीडीडीएस), डॉग स्क्वॉड और स्थानीय पुलिस की संयुक्त टीमों ने हर स्कूल परिसर की बारीकी से जांच की। स्कूलों के कक्षाओं, मैदानों, पार्किंग क्षेत्रों और अन्य संवेदनशील स्थानों को पूरी तरह से खंगाला गया। इस प्रक्रिया में सुरक्षा एजेंसियों ने किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने से बचते हुए अत्यधिक सतर्कता बरती।

जांच के दौरान किसी भी स्कूल में कोई संदिग्ध वस्तु या विस्फोटक सामग्री नहीं मिली। इसके बाद अधिकारियों ने पुष्टि की कि यह धमकी पूरी तरह से फर्जी थी और इसका उद्देश्य केवल दहशत फैलाना था। अहमदाबाद के डीसीपी (एसओजी) राहुल त्रिपाठी ने बताया कि सभी स्कूलों की जांच पूरी तरह से की गई और कहीं भी कोई खतरा नहीं पाया गया। उन्होंने यह भी कहा कि पुलिस इस ईमेल के स्रोत का पता लगाने के लिए साइबर विशेषज्ञों की मदद ले रही है।

वडोदरा के डीसीपी (क्राइम) हिमांशु वर्मा ने बताया कि धमकी भरे ईमेल में खालिस्तान के समर्थन का उल्लेख किया गया था और एक निश्चित समय पर विस्फोट की चेतावनी दी गई थी। हालांकि जांच में यह स्पष्ट हो गया कि यह केवल एक अफवाह थी और इसका कोई वास्तविक आधार नहीं था। पुलिस अब यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि यह ईमेल किसने और किस उद्देश्य से भेजा।

इस घटना के बाद स्कूल प्रशासन और अभिभावकों के बीच कुछ समय के लिए भय और चिंता का माहौल बन गया था। कई अभिभावक तुरंत स्कूल पहुंचे और अपने बच्चों को सुरक्षित घर ले गए। हालांकि बाद में जब पुलिस ने स्थिति को सुरक्षित घोषित किया, तब जाकर लोगों ने राहत की सांस ली। यह घटना केवल एक फर्जी धमकी भर नहीं है, बल्कि यह एक गंभीर चेतावनी भी है कि साइबर माध्यमों का दुरुपयोग करके किस प्रकार बड़े पैमाने पर दहशत फैलाने की कोशिश की जा सकती है।

अपने ही बयान से घिरे मणिशंकर अय्यर: कांग्रेस की जीत पर जताया संदेह, पार्टी नेताओं पर साधा तीखा निशाना

(जीएनएस)। केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में दिया गया एक बयान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मणिशंकर अय्यर के लिए भारी पड़ गया है। अपने बेबाक और विवादास्पद बयानों के लिए पहचाने जाने वाले अय्यर ने इस बार न केवल अपनी ही पार्टी की चुनावी संभावनाओं पर सवाल खड़े कर दिए, बल्कि पार्टी के प्रमुख नेताओं पर भी तीखा हमला बोलकर राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है। उनके बयान ने कांग्रेस के भीतर चल रही वैचारिक असहमति और नेतृत्व संकट को एक बार फिर सार्वजनिक मंच पर ला दिया है। रविवार को आयोजित एक कार्यक्रम में, जिसमें केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन भी मौजूद थे, मणिशंकर अय्यर ने खुले तौर पर उनकी प्रशंसा की और यह तक कह दिया कि पिनरई विजयन फिर से मुख्यमंत्री बनेंगे। यह बयान अपने आप में चौंकाने वाला था, क्योंकि अय्यर जिस पार्टी से जुड़े हैं, वह केरल में वामपंथी दलों की प्रमुख प्रतिद्वंद्वी है। कांग्रेस और वाम मोर्चे के बीच वर्षों से राजनीतिक संघर्ष चलता रहा है, ऐसे में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता द्वारा

वामपंथी मुख्यमंत्री की खुलकर तारीफ करना पार्टी के लिए असहज स्थिति पैदा करने वाला था।

अय्यर के इस बयान के तुरंत बाद कांग्रेस के भीतर प्रतिक्रिया का दौर शुरू हो गया। पार्टी के प्रवक्ता पवन खेड़ा और महासचिव जयराम रमेश ने उनके बयान से खुद को और पार्टी को अलग कर लिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि मणिशंकर अय्यर के विचार उनके निजी विचार हैं और उनका कांग्रेस पार्टी की आधिकारिक लाइन से कोई संबंध नहीं है। इस प्रतिक्रिया ने यह संकेत दिया कि पार्टी नेतृत्व अय्यर के प्रकरण से दूरी बनाकर संभावित राजनीतिक नुकसान को सीमित करना चाहता है।

हालांकि, मणिशंकर अय्यर ने इस आलोचना को चुपचाप स्वीकार करने के बजाय तीखा पलटवार किया। उन्होंने पवन खेड़ा को आड़े हाथों लेते हुए उन्हें "कठपुतली" और "तोता" तक कह दिया। अय्यर ने आरोप लगाया कि पवन खेड़ा स्वतंत्र रूप से नहीं बोलते, बल्कि वे केवल जयराम रमेश के निर्देशों का पालन करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस जैसे बड़े और ऐतिहासिक संगठन में प्रवक्ता के पद के लिए कई योग्य लोग मौजूद हैं, लेकिन इसके बावजूद ऐसे लोगों को जिम्मेदारी दी जा रही है जो स्वतंत्र सोच नहीं रखते।

अय्यर का यह बयान केवल व्यक्तिगत आलोचना तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें कांग्रेस के संगठनात्मक ढांचे और निर्णय प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए गए। उन्होंने यह संकेत देने की कोशिश की कि पार्टी के भीतर वास्तविक संवाद और स्वतंत्र विचारों के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। यह आरोप कांग्रेस के लिए असहज स्थिति पैदा करता है, क्योंकि पार्टी लंबे समय से आंतरिक लोकतंत्र और वैचारिक विविधता की बात करती रही है।

इस विवाद का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अय्यर ने कांग्रेस की चुनावी संभावनाओं पर भी अप्रत्यक्ष रूप से संदेह व्यक्त किया। उनका यह रुख पार्टी के मनोबल के लिए चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि चुनावों से पहले इस प्रकार के बयान विपक्ष को राजनीतिक हमला करने का अवसर दे सकते हैं। किसी भी राजनीतिक दल के लिए यह आवश्यक होता है कि उसके वरिष्ठ नेता सार्वजनिक रूप से पार्टी की ताकत और संभावनाओं पर विश्वास जताएं, लेकिन अय्यर के बयान ने इसके विपरीत संदेश दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद कांग्रेस के भीतर चल रहे वैचारिक और नेतृत्व संबंधी मतभेदों का एक और उदाहरण है। पार्टी पिछले कुछ वर्षों से लगातार चुनावी चुनौतियों का सामना कर रही है, और इस दौरान कई बार वरिष्ठ नेताओं के बीच सार्वजनिक मतभेद सामने आए हैं। इस प्रकार की घटनाएं पार्टी की एकजुटता और रणनीतिक स्पष्टता पर सवाल खड़े करती हैं। दूसरी ओर, अय्यर ने यह भी स्पष्ट किया कि वे अभी भी कांग्रेस के सदस्य हैं और उन्होंने पार्टी नहीं छोड़ी है। उन्होंने कहा कि यदि पार्टी उन्हें निकालती है, तो वे खुशी-खुशी पार्टी छोड़ देंगे। यह बयान उनके आत्मविश्वास और अपने विचारों पर दृढ़ता को दर्शाता है, लेकिन साथ ही यह भी संकेत देता है कि पार्टी और उनके बीच संबंध तनावपूर्ण हो चुके हैं।

यह विवाद ऐसे समय में सामने आया है जब कांग्रेस देशभर में अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने की कोशिश कर रही है। पार्टी विभिन्न राज्यों में चुनावी रणनीतियां बना रही है और नए गठबंधनों की संभावनाओं पर भी काम कर रही है। ऐसे में इस प्रकार के आंतरिक विवाद पार्टी की रणनीति और छवि को प्रभावित कर सकते हैं।

भरोसे, वादे और कानून के बीच खड़ी सच्चाई: सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी ने रिश्तों और जिम्मेदारी पर छेड़ी नई बहस

(जीएनएस)। देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट में हाल ही में एक ऐसा मामला सामने आया, जिसने न केवल कानून और न्याय की सीमाओं को रेखांकित किया, बल्कि आधुनिक रिश्तों, भरोसे और व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर भी गहरी बहस छेड़ दी है। झूठे शादी के वादे पर बने शारीरिक संबंधों और उसके बाद लगे दुष्कर्म के आरोप से जुड़े इस मामले में अदालत की टिप्पणी ने समाज को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि बदलते समय में रिश्तों की परिभाषा और उनसे जुड़ी जिम्मेदारियां किस दिशा में जा रही हैं।

यह मामला उस समय सुर्खियों में आया जब एक महिला ने आरोप लगाया कि एक व्यक्ति ने शादी का वादा करके उसके साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए और बाद में उस वादे से मुकर गया। आरोपी की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने कई महत्वपूर्ण टिप्पणियां कीं। अदालत ने कहा कि शादी से पहले लड़का और लड़की मूल रूप से अजनबी होते हैं और ऐसे में किसी पर आंख बंद करके भरोसा करना उचित नहीं है। अदालत की यह टिप्पणी केवल एक कानूनी राय नहीं थी, बल्कि इसमें समाज के लिए एक चेतावनी और मार्गदर्शन दोनों शामिल थे।

इस मामले की शुरुआत वर्ष 2022 में हुई थी, जब महिला और आरोपी की मुलाकात एक वैवाहिक वेबसाइट के माध्यम से हुई। दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई और धीरे-धीरे यह संबंध भावनात्मक और शारीरिक स्तर तक पहुंच गया। महिला का आरोप है कि आरोपी ने बार-बार शादी का वादा किया और इसी भरोसे पर उसने संबंध बनाए। बाद में आरोपी उसे दुबई भी लेकर गया, जहां कथित रूप से उसकी आपत्तिजनक वीडियो बिना अनुमति के रिकॉर्ड की गई। महिला का दावा है कि आरोपी ने उसे धमकी दी कि यदि उसने शादी के लिए दबाव डाला या शिकायत की, तो वह वीडियो सार्वजनिक कर देगा।

यह आरोप और भी गंभीर तब हो गया जब महिला को यह पता चला कि आरोपी पहले से विवाहित था और उसने एक अन्य महिला से शादी भी कर ली थी। इस खुलासे के बाद महिला ने अदालत का दरवाजा खटखटाया और आरोपी पर दुष्कर्म, धोखाधड़ी और धमकी देने के आरोप लगाए। निचली अदालत और दिल्ली हाई कोर्ट ने आरोपी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया था और माना था कि प्रथम दृष्टया आरोपी का शादी का वादा झूठा प्रतीत होता है।

जब मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा, तो अदालत ने तथ्यों और परिस्थितियों का गंभीरता से अध्ययन किया। सुनवाई के दौरान अदालत ने यह भी कहा कि प्रथम दृष्टया यह संबंध सहमति से बना प्रतीत होता है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि सहमति का आधार यदि धोखा या झूठा वादा हो, तो मामला अलग रूप ले सकता है। अदालत ने यह भी संकेत दिया कि ऐसे मामलों में सच्चाई को समझना और न्याय सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

अदालत की टिप्पणी का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि उसने दोनों पक्षों को सावधानी और समझदारी बरतने की सलाह दी। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि भले ही यह विचार कुछ लोगों को पुराने लग सकते हैं, लेकिन किसी भी रिश्ते में प्रवेश करने से पहले व्यक्ति को पूरी तरह आश्वस्त होना चाहिए। यह टिप्पणी आधुनिक समाज के उस पहलू को उजागर करती है, जहां भावनाएं और भरोसा अक्सर कानूनी विवादों का कारण बन जाते हैं।

इस मामले ने लिव-इन रिलेशनशिप और विवाह पूर्व संबंधों के कानूनी और सामाजिक पहलुओं को भी चर्चा के केंद्र में ला दिया है। आज के समय में लिव-इन रिलेशनशिप अधिक सामान्य हो गए हैं, लेकिन उनके साथ जुड़े कानूनी और नैतिक प्रश्न अभी भी जटिल हैं। अदालत को यह तय करना होता है कि संबंध सहमति से बना था या उसमें धोखा और दबाव शामिल था। यह निर्णय केवल कानून के आधार पर नहीं, बल्कि परिस्थितियों और सबूतों के आधार पर लिया जाता है।

सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए दोनों पक्षों को मध्यस्थता के लिए भेजने पर विचार किया है। अदालत ने आरोपी के वकील से यह भी पूछा कि क्या महिला को मुआवजा देने की संभावना है। यह संकेत देता है कि अदालत केवल सजा देने पर ही ध्यान केंद्रित नहीं कर रही, बल्कि पीड़ित को न्याय और राहत दिलाने के अन्य विकल्पों पर भी विचार कर रही है।

यह मामला समाज के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर आया है। यह संदेश केवल महिलाओं के लिए ही नहीं, बल्कि पुरुषों के लिए भी है कि किसी भी रिश्ते में ईमानदारी और स्पष्टता अत्यंत आवश्यक है। झूठे वादों और धोखे के आधार पर बने संबंध न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि कानूनी जटिलताओं और सामाजिक विवादों का कारण भी बनते हैं।

आज के समय में, जब डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से नए रिश्ते बनाना आसान हो गया है, तब सावधानी और सतर्कता और भी अधिक आवश्यक हो गई है। लोग अक्सर भावनाओं में बहकर निर्णय लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें उसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। अदालत की टिप्पणी इस बात की याद दिलाती है कि व्यक्तिगत निर्णयों के साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि कानून का उद्देश्य केवल अपराधियों को सजा देना नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा दिखाना भी है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी आने वाले समय में ऐसे मामलों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ बन सकती है। यह न केवल न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा है, बल्कि समाज के लिए एक चेतावनी और मार्गदर्शन भी है कि रिश्तों में भरोसा महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है समझदारी और सावधानी।

अंततः यह मामला केवल एक कानूनी विवाद नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के बदलते रिश्तों और उनके परिणामों की कहानी है। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि भावनाओं के साथ-साथ विवेक और जिम्मेदारी भी उतनी ही आवश्यक हैं। अदालत की टिप्पणी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कानून हर व्यक्ति की सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित करने के लिए मौजूद है, लेकिन साथ ही यह भी जरूरी है कि लोग अपने निर्णयों में सावधानी और परिपक्वता दिखाएं, ताकि विश्वास और सम्मान पर आधारित स्वस्थ और सुरक्षित रिश्ते कायम रह सकें।

संपादकीय

सेहत का शिवत्व

भारत की सनातन संस्कृति में पर्व, त्योहार और व्रत केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि वे मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन के अद्भुत साधन भी हैं। हमारे पूर्वजों ने इन पर्वों की संरचना केवल आस्था के आधार पर नहीं की, बल्कि उन्हें प्रकृति, ऋतु चक्र और मानव स्वास्थ्य के गहरे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक संबंधों से जोड़कर विकसित किया। इन्हीं महान पर्वों में महाशिवरात्रि का विशेष स्थान है, जो केवल भगवान शिव की उपासना का अवसर नहीं, बल्कि आत्मसंयम, साधना, स्वास्थ्य संवर्धन और सामाजिक समरसता का भी अद्भुत पर्व है। महाशिवरात्रि का पर्व उस समय आता है जब प्रकृति एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रही होती है। शीत ऋतु धीरे-धीरे विदा ले रही होती है और वसंत ऋतु का आगमन प्रारंभ हो रहा होता है। यह वह समय होता है जब वातावरण में ठंडक कम होने लगती है और सूर्य की किरणें गुनगुनी ऊष्मा के साथ धरती को नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। यह परिवर्तन केवल बाहरी वातावरण में ही नहीं होता, बल्कि इसका प्रभाव मानव शरीर और मन पर भी पड़ता है। इस समय शरीर के अंदर वात, पित्त और कफ का संतुलन प्रभावित होता है और यदि इस समय उचित आहार, संयम और साधना का पालन किया जाए, तो शरीर को नई ऊर्जा और संतुलन प्राप्त होता है। महाशिवरात्रि का व्रत इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्रत केवल भोजन का त्याग नहीं है, बल्कि यह शरीर और मन की शुद्धि का एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक उपाय है। जब व्यक्ति व्रत करता है, तो उसका पाचन तंत्र विश्राम प्राप्त करता है। यह विश्राम शरीर के अंदर संचित विषैले तत्वों को बाहर निकालने में सहायता करता है और शरीर को नई ऊर्जा प्रदान करता है। व्रत के दौरान फल, दूध और प्राकृतिक आहार का सेवन शरीर के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। यह आहार न केवल शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करता है, बल्कि शरीर के तीनों दोषों—वात, पित्त और कफ—को संतुलित करने में भी सहायक होता है। महाशिवरात्रि का एक और महत्वपूर्ण पहलू मानसिक और भावनात्मक शुद्धि है। आधुनिक जीवन की भागदौड़, तनाव और मशीनीकृत जीवनशैली ने मनुष्य को मानसिक रूप से थका दिया है। इस स्थिति में महाशिवरात्रि जैसे पर्व व्यक्ति को अपने भीतर झांकने, आत्मचिंतन करने और मानसिक शांति प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। जब व्यक्ति शिवालय में जाकर भगवान शिव का जलाभिषेक करता है, तो वह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं कर रहा होता, बल्कि वह अपने मन के तनाव, चिंता और नकारात्मक भावनाओं को भी त्याग रहा होता है। शिवलिंग पर जल अर्पित करना प्रतीकात्मक रूप से अपने अहंकार, क्रोध और नकारात्मकता को त्यागने का संकेत भी है। महाशिवरात्रि का सामाजिक महत्व भी अत्यंत गहरा है। इस दिन समाज के सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ शिवालयों में एकत्र होते हैं। मंदिरों की लंबी कतारों में खड़े लोग यह अनुभव करते हैं कि वे सभी समान हैं और सभी भगवान के समक्ष एक समान हैं। यह अनुभव सामाजिक समरसता और समानता की भावना को मजबूत करता है। इस दिन जगह-जगह भंडारों का आयोजन होता है, जहां लोगों को निःशुल्क भोजन और फल वितरित किए जाते हैं। यह परंपरा समाज में दान, सेवा और सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है। महाशिवरात्रि का पर्व हमें प्रकृति के साथ हमारे गहरे संबंध का भी स्मरण कराता है। भगवान शिव को प्रकृति का देवता माना जाता है। उनका निवास स्थान कैलाश पर्वत है, जो प्रकृति की गोद में स्थित है। उनके सिर पर बहने वाली गंगा, उनके गले में विराजमान सर्प और उनके वाहन नंदी बैल सभी प्रकृति के विभिन्न तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रतीक हमें यह संदेश देते हैं कि मानव जीवन का अस्तित्व प्रकृति के संतुलन पर निर्भर है और हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीना चाहिए। महाशिवरात्रि का व्रत और साधना व्यक्ति को आत्मसंयम का अभ्यास भी कराते हैं। आत्मसंयम जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण है, जो व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है। जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और भौतिक आकर्षणों पर नियंत्रण रखता है, तो वह अपने जीवन में अधिक संतुलन और शांति प्राप्त करता है। यह आत्मसंयम केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। महाशिवरात्रि का पर्व हमें यह भी सिखाता है कि जीवन में सरलता और सहजता का कितना महत्व है। इस दिन लोग अपने दैनिक जीवन की जटिलताओं और कृत्रिमताओं को त्यागकर एक सरल और सहज जीवन का अनुभव करते हैं।

राजस्व घाटे के बहाने तैयार रणनीति

"वित्त आयोग ने केंद्र को प्राप्त कुल राजस्व में से राज्यों को दिए जाने वाले हिस्से का फार्मूला बदल दिया है। अब से किसी राज्य को केंद्र से मिलने वाले धन की मात्रा इस बात पर निर्भर करेगी कि राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में उसका योगदान कितना रहा।

गत सप्ताह की शुरुआत में 'द ट्रिब्यून' में मेरे सहयोगी सुभाष राजटा की लिखी एक खबर छपी थी, जो हिमाचल प्रदेश की सुखविंदर सिंह सुक्खू सरकार द्वारा अपने इस्तेमाल के लिए 10 लग्ज़री कारें खरीदने के बारे में थी –जबकि ठीक इसी वक्त मुख्यमंत्री 16वें वित्त आयोग के कर्ता-धर्ताओं से राज्यों को दिए जाने वाला राजस्व घाटा अनुदान बंद करने और मितव्ययिता अपनाने वाले अपने उस फैसले पर पुनर्विचार के लिए गुहार लगाने दिल्ली गए थे– इस खबर से हंगामा मच गया।

लोगों का पूछना वैध है कि अगर स्कूलों, बसों, अस्पतालों वगैरह के बजट में कटौती की जा रही है तो ऐसे में मंत्रियों और नौकरशाहों को फैंसी, नई कारों का इस्तेमाल करने की ज़रूरत क्यों है —देखा जाए तो, 'लाल बत्ती' का खुमार नई गाड़ियों की खरीद करने से नहीं रोकता। फिर, हिमाचल सरकार अपनी ही पार्टी की बनाई उस 'सुधार संहिता पुस्तिका' से सबक क्यों नहीं ले रही, जिसे 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव ने लागू किया था, और जिसको बनाने में उस वक्त के वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और वित्त सचिव मोंटेक सिंह आहलूवालिया ने अच्छी-खासी मदद की थी। इससे न केवल भारत को बदलने में मदद मिली बल्कि भारतीयों को दुनिया का सामना करने का आत्मविश्वास भी मिला। (लगता है कि सुक्खू ने कुछ नए उपाय सीखने के लिए पिछले दिनों पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम से मुलाकात की है)।

निश्चित तौर पर, 6,390 करोड़ रुपये के राजस्व घाटा, जो कि हिमाचल प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद का 2.5 फीसदी बनता है, सुक्खू के लिए एक समस्या है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि राजस्व घाटे में रहने वाला केवल उनका राज्य ही एकमात्र है। न ही ऐसा है कि पैसा खर्च करना कोई बुरी बात है— लेकिन हम सब जानते हैं कि जरूरत से अधिक खर्च (जब

तक कि यह आपको ऐसे कर्ज़ में न डाल दे जिसे आप चुका न पाएं) अर्थव्यवस्था चलाए रखने में मददगार होता है। इसीलिए यह मापने करने के लिए कितना कर्जदार आपका सूबा है, मुख्य पैमाना निरोल आकंड़े न देखकर, राज्य के सकल घरेलू उत्पाद के परिप्रेक्ष्य में राजस्व घाटे का प्रतिशत कितना है, यह देखना चाहिए।

तो पंजाब का अनुमानित राजस्व घाटा, जो 23,957 करोड़ रुपये है, जो कि सूबे के सकल घरेलू उत्पाद का 2.7 प्रतिशत बनता है, और यह काफी ज्यादा है। तमिलनाडु का राजस्व घाटा 41,635 करोड़ रुपये तो और भी ज़्यादा है, लेकिन यह राज्य के सकल घरेलू उत्पाद का महज 1.17 प्रतिशत है। केरल की मार्क्सवादी सरकार– जो अपने बजट का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक भलाई योजनाओं में लगाती है और जिसकी आबादी पंजाब जितनी ही है– उसका राजस्व घाटा पंजाब के मुकाबले ज़्यादा है, 27,125 करोड़ रुपये, लेकिन सकल घरेलू उत्पाद के परिप्रेक्ष्य में राजस्व घाटा उससे कम है, यानी 1.9 फीसदी। वहीं दूसरी ओर, भारत के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक कर्नाटक का राजस्व घाटा 19,262 करोड़ रुपये है, जो कि उसके सकल घरेलू उत्पाद के परिप्रेक्ष्य में महज 0.6 फीसदी बनता है।

आप तस्वीर साफ़ रूप में देखिए। छोटे से हिमाचल प्रदेश ने शिक्षा जैसे कुछ पैमानों पर अच्छा कर दिखाया है, लेकिन वह अपना खर्च पूरी तरह से अपने तौर पर चलाने के लिए पर्याप्त राजस्व नहीं जुटा पाता। दूसरी ओर, तमिलनाडु जैसे कहीं ज्यादा बड़ा सूबे, भले ही वे मुफ़्त की रेवड़ियां बांटने में पैसा उड़ाते हों – यह सब करने का आरोप हिमाचल पर भी है – अपने बजट को काबू में रख पाते हैं क्योंकि बड़े पैमाने के निवेश इन्वेस्टमेंट बूते वे अपने खर्च को पूरा कर पाते हैं।

असल में, तमिलनाडु, जहां एक साल के भीतर विधानसभा चुनाव होने हैं –2027 में, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के साथ– उसने अपने राजस्व घाटे को और भी नीचे लाने का वादा किया है। दूसरी ओर, पंजाब और हिमाचल, दोनों के सामने खाली पड़ा खजाना मुंह बाए खड़ा है – और उसे भरने के उपाय उनके पास कम ही हैं।

फिर भी, इसमें से कुछ अभी भी नया नहीं है। पिछले कुछ दिनों में जिस बात ने सच में सबको चौंका दिया है, वह जाने-माने अर्थशास्त्री अरविंद पनगढ़िया के नेतृत्व वाले 16वें वित्त द्वारा राजस्व घाटा अनुदान बंद करने की घोषणा न होकर बल्कि कुछ और ज़्यादा ज़रूरी बात है। वित्त आयोग ने एक बिल्कुल नया मापदंड जोड़कर केंद्र को प्राप्त कुल राजस्व में से राज्यों को दिए जाने वाले हिस्से का फार्मूला बदल डाला है —जो उनके बजट का 41 प्रतिशत तक हुआ करता था। अब से किसी राज्य को केंद्र से मिलने वाला धन की मात्रा इस बात पर निर्भर करेगी कि राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में उसका योगदान कितना रहा।

यहां पर दो संदेश हैं। पहला, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र जैसे लचीले और निवेश-मित्र राज्यों को फायदा होगा; जबकि हिमाचल प्रदेश जैसे सूबे, जिनकी आय क्षमता सीमित है, उनको नुकसान होगा। इसलिए, पहला सवाल यह है कि इसका केंद्र-राज्य संबंधों पर क्या असर पड़ेगा, जिनका बही-खाता अब तक पारंपरिक रूप से बराबरी और कमजोर तबके के लिए ज़्यादा उदारता भरी सोच रखने पर आधारित रहा है। नए फॉर्मूले के तहत, कमजोर तबके को खुद को घाटे से बाहर निकालने के लिए ज़्यादा मेहनत करनी होगी। यह देखना दिलचस्प है कि हिमाचल को असल में 15वें वित्त आयोग की अपेक्षा 16वें वित्त आयोग से ज़्यादा धन मिला है। यानी जब श्रीमान सुक्खू शोर मचा रहे हैं कि उनके राज्य को पर्याप्त धन नहीं दिया गया, ऐसे में वित्त मंत्रालय के बाबुओं का यह कहना सही होगा 'नहीं, असल में हिमाचल के पास धन है' और यह कि कांग्रेस सरकार को अपने वित्तीय खर्चों का प्रबंधन बेहतर ढंग से करना सीखना चाहिए। (सनद रहे, हिमाचल में 2027 के आखिर में चुनाव हैं।)

दूसरा संदेश भी उतना ही दिलचस्प है। अगले 12 महीनों में जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, जैसे कि तमिलनाडु, असम, पंजाब, केरल और पश्चिम बंगाल —उनमें बंगाल को छोड़कर— उन्हें 15वें वित्त आयोग से मिले धन की बनिस्बत वर्तमान में अधिक हिस्सा मिला है। इनमें असम को छोड़, बाकी सब राज्यों में विपक्षी सरकारें हैं। चौंकाने वाली बात यह कि बड़े सूबे जैसे कि बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश, जहां भाजपा सरकारें हैं –उन्हें पिछली बार की अपेक्षा इस बार कम धन मिला है।

निरा संयोग या शुद्ध रणनीति? श्रीमान पनगढ़िया निस्संदेह, अधिक अर्थपूर्ण और कहीं कम फिजूलखर्च अर्थव्यवस्था के पक्ष में होंगे। उनका तर्क हो सकता है कि धन का कोई रंग नहीं होता, फिर क्या हुआ कि इनमें से कुछ राज्यों में विपक्षी दलों की सरकार है। लेकिन लगता है केंद्र से आया संदेश बहुत अलग है। हिंदी भाषी सूबों को कम धन आवंटित किया गया, क्योंकि वे तो पहले से ही भाजपा की झोली में हैं। दरियादिली कहीं और बेहतर इस्तेमाल हो सकती है। खासकर जहां विधानसभाई चुनाव होने जा रहे हैं।

निस्संदेह, हिमाचल की तरह पंजाब भी भाजपा के राडार पर है। भले ही केरल अलग किस्म की मछली हो, फिर भी मछली को चारा डालने में कोई नुकसान नहीं है – वास्तव मे, तिरुवरअनंतपुरम में यह कांटे में फंस भी चुकी है। तमिलनाडु कहीं बड़ा है और पार पाने में कहीं ज्यादा मुश्किल है (कर्नाटक के लिए 2028 तक इंतजार करना होगा)।

स्पष्ट है कि 16वें वित्त आयोग ने बीज बो दिया है। अब पौधे को पानी देना और यह देखना बाकी है कि पल्लवित किस प्रकार होता है।

प्रेरणा

वैर से अवैर की विजय ही जीवन की सच्ची सफलता

इस संसार में मनुष्य का जीवन सबसे अनमोल उपहार माना गया है। यह केवल जन्म लेकर, भौतिक सुखों का उपभोग करके और अंततः मृत्यु को प्राप्त हो जाने की एक साधारण प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह आत्मबोध, सह-अस्तित्व, करुणा और विवेक की एक गहन यात्रा है। जीवन हमें यह अवसर देता है कि हम अपने भीतर छिपे श्रेष्ठ गुणों को पहचानें और उन्हें अपने व्यवहार में उतारकर स्वयं के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाएं। लेकिन अक्सर ऐसा देखा जाता है कि मनुष्य अपने इस अनमोल जीवन का वास्तविक मूल्य समझ नहीं पाता और क्षणिक क्रोध, अहंकार या स्वार्थ के कारण ऐसे निर्णय ले लेता है, जो विनाश और पश्चाताप का कारण बनते हैं। एक पुरानी घटना इस सत्य को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से स्पष्ट करती है।

दो गांवों के बीच एक नदी बहती थी, जो दोनों गांवों के लिए जीवन का आधार थी। उसी नदी का जल उनके खेतों को हरा-भरा रखता था, पशुओं की प्यास बुझाता था और लोगों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करता था। वर्षों तक दोनों गांवों के लोग इस जल का उपयोग बिना किसी विवाद के करते रहे। उनके बीच आपसी समझ और सहयोग का भाव था। वे जानते थे कि प्रकृति का यह उपहार किसी एक का नहीं, बल्कि सभी का है। लेकिन समय के साथ परिस्थितियां बदलने लगीं। एक वर्ष वर्षा कम हुई, नदी का जलस्तर घट गया और पानी की कमी महसूस होने लगी। यह कमी धीरे-धीरे चिंता का कारण बनी और चिंता ने विवाद का रूप ले लिया। एक दिन दोनों गांवों के लोग नदी के किनारे एकत्र हो गए। पहले तो उन्होंने आपस में बातचीत करने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही बातचीत आरोप-प्रत्यारोप में बदल गई। दोनों पक्ष अपने-अपने अधिकार का दावा करने लगे। क्रोध बढ़ता गया, शब्द कठोर होते गए और अंततः स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि लोगों ने हथियार उठा लिए। उनके चेहरों पर आक्रोश था, आंखों में अहंकार था और मन में केवल एक ही विचार था—पानी पर अपना अधिकार स्थापित करना। उस क्षण वे यह भूल चुके थे कि जिस पानी के लिए वे लड़ रहे हैं, वही पानी जीवन का स्रोत है, न कि जीवन को समाप्त करने का कारण।

उसी समय वहां से एक संत का आगमन हुआ। उनका व्यक्तित्व शांत और तेजस्वी था। उन्होंने लोगों को इस अवस्था में देखा और उनकी पीड़ा को समझा। वे धीरे-धीरे आगे बढ़े और शांत स्वर में पूछा, "आप लोग आपस में क्यों लड़ रहे हैं?" लोगों ने उत्तर दिया, "हम पानी के लिए लड़ रहे हैं, क्योंकि यह हमारे जीवन के लिए आवश्यक है।"

संत ने कुछ क्षण मौन रहकर फिर पूछा, "पानी का मूल्य क्या है?" लोगों ने सहज भाव से उत्तर दिया, "पानी का कोई मूल्य नहीं है। यह तो प्रकृति का उपहार है, जो हमें बिना किसी मूल्य के प्राप्त होता है।" संत ने मुस्कुराते हुए अगला प्रश्न किया, "और मनुष्य के जीवन का क्या मूल्य है?" इस बार लोगों ने बिना किसी संकोच के कहा, "मनुष्य का जीवन अनमोल है। इसका मूल्य किसी भी वस्तु से नहीं आंका जा सकता।"

संत ने तब गंभीर स्वर में कहा, "यदि पानी का कोई मूल्य नहीं है और जीवन अनमोल है, तो क्या उस अनमोल जीवन को बिना मूल्य की वस्तु के लिए नष्ट करना उचित है?" यह सुनते ही वहां गहरा मौन छा गया। लोगों के हाथों में पकड़े हथियार धीरे-धीरे नीचे झुकने लगे। उनके मन में जो क्रोध था, वह धीरे-धीरे शांत होने लगा। विवेक ने उनके हृदय में स्थान लेना शुरू किया। उन्हें यह एहसास हुआ कि वे एक ऐसी वस्तु के लिए अपने ही समान अनमोल जीवन को नष्ट करने पर उतारू थे, जिसका मूल्य स्वयं उन्होंने शून्य बताया था।

संत ने आगे कहा, "जीवन की सबसे बड़ी विजय किसी को पराजित करने में नहीं, बल्कि शत्रुता को समाप्त करने में है। जो व्यक्ति वैर का उत्तर वैर से देता है, वह केवल संघर्ष को बढ़ाता है। लेकिन जो व्यक्ति वैर का उत्तर अवैर से देता है, वही सच्चा विजेता होता है। क्रोध से केवल विनाश होता है, लेकिन शांति से सृजन होता है। यदि आप अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं, तो आपको अपने भीतर करुणा, धैर्य और सहनशीलता को स्थान देना होगा।"

उनके शब्दों में केवल ज्ञान नहीं था, बल्कि अनुभव का सत्य था। दोनों गांवों के लोगों ने अपने हथियार नीचे रख दिए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और उनके मन में पश्चाताप की भावना उत्पन्न हुई। उन्हें एहसास हुआ कि वे अपने ही समान मनुष्यों के विरुद्ध खड़े थे, जिनकी आवश्यकताएं, भावनाएं और जीवन उनके जैसे ही थे। उस क्षण उन्हें यह समझ में आ गया कि कोई भी संसाधन मानव जीवन से अधिक मूल्यवान नहीं हो सकता।

उस दिन दोनों गांवों के लोगों ने यह निर्णय लिया कि वे पानी को लेकर कभी विवाद नहीं करेंगे, बल्कि उसे मिल-बांटकर उपयोग करेंगे। उन्होंने यह भी समझ लिया कि सहयोग ही जीवन का आधार है और संघर्ष केवल विनाश का मार्ग है। उस संत के कुछ सरल शब्दों ने उनके जीवन की दिशा बदल दी थी। उन्होंने उन्हें यह सिखाया था कि जीवन का वास्तविक मूल्य भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि शांति, प्रेम और सह-अस्तित्व में है।

यह घटना केवल एक कहानी नहीं, बल्कि जीवन का एक गहरा संदेश है। आज भी समाज में अधिकांश संघर्ष अहंकार, स्वार्थ और संसाधनों के कारण होते हैं। लोग यह भूल जाते हैं कि जीवन स्वयं सबसे बड़ा संसाधन है। जब मनुष्य अपने अहंकार से ऊपर उठकर दूसरों को समझने का प्रयास करता है, तभी वह सच्चे अर्थों में जीवन की सार्थकता को समझ पाता है।

जीवन हमें यह अवसर देता है कि हम अपने भीतर के अंधकार को दूर करके प्रकाश को अपनाएं। यह हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति दूसरों को हराने में नहीं, बल्कि स्वयं को जीतने में है। जो व्यक्ति अपने क्रोध, अहंकार और द्वेष पर नियंत्रण पा लेता है, वही सच्चे अर्थों में विजेता होता है। वही व्यक्ति समाज में शांति और संतुलन स्थापित कर सकता है।

जब मनुष्य यह समझ लेता है कि जीवन अनमोल है और इसका उद्देश्य केवल संघर्ष नहीं, बल्कि सृजन और सहयोग है, तभी उसका जीवन सार्थक बनता है। वह हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखना सीखता है और हर व्यक्ति में अपने समान एक चेतन अस्तित्व को पहचानता है। यही समझ उसे एक बेहतर इंसान बनाती है और यही जीवन की सच्ची सफलता है।

एआई इम्पैक्ट सम्मिट 2026 के नीतिगत-समूहगत वैश्विक मायने

एआई इम्पैक्ट समिट 2026 भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में 16-20 फरवरी 2026 को आयोजित एक प्रमुख वैश्विक आयोजन है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के जिम्मेदार और समावेशी विकास पर केंद्रित है। यह समिट ग्लोबल साउथ के लिए पहला बड़ा AI शिखर सम्मेलन है, जो 100+ देशों से 35,000+ प्रतिनिधियों को एकजुट कर रहा है। देखा जाए तो यह समिट इंडियाAI मिशन के तहत आयोजित हो रहा है, जिसमें राष्ट्राध्यक्ष, मंत्री, उद्योग नेता, शोधकर्ता और सिविल सोसाइटी शामिल होंगे।

वास्तव में यह आयोजन UK AI Safety Summit, Seoul AI Summit जैसे पूर्व आयोजनों की निरंतरता में वैश्विक AI सहयोग को मजबूत करेगा। जिसका मुख्य थीम 'पीपुल, प्लैनेट, प्रोग्रेस' है। ये नीतियों को व्यावहारिक प्रभाव में बदलने पर जोर देता है। इस समिट का वैश्विक महत्व यह है कि AI इम्पैक्ट समिट AI के लोकतंत्रीकरण पर फोकस करता है, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए संसाधनों को सुलभ बनाने हेतु सक्रिय किया गया है।

वहीं, भारत की पूरक नवाचार क्षमता ग्लोबल AI नेतृत्व स्थापित करने में मदद करेगी, साथ ही जिम्मेदार AI शासन के मानकों को आकार देगी। इसमें 16 देशों के राष्ट्राध्यक्षों की भागीदारी आर्थिक कूटनीति और विकासशील राष्ट्रों की आवाज को मजबूत करेगी। इसकी प्रमुख पहलें इस प्रकार हैं जो डेमोक्रेटाइजिंग AI रिसोर्सेज वर्किंग ग्रुप (भारत, मिस्र, केन्या सह-अध्यक्ष) सार्वजनिक AI संसाधनों को किफायती बनाने पर काम कर रहा है।

जहां तक इसके वैश्विक प्रभाव की बात है तो इससे जुड़ीं चुनौतियां समावेशी AI नवाचारों को प्रोत्साहित करेंगी। लिहाजा यह समिट AI को आर्थिक-रणनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित कर वैश्विक विभाजन को पाटेगा। दरअसल, एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का मुख्य एजेंडा एआई को जिम्मेदार, समावेशी और प्रभावी बनाने पर केंद्रित है, जो तीन सूत्रों—लोग (People), ग्रह (Planet), और प्रगति (Progress)—पर आधारित है। यह एजेंडा एक्शन से इंपैक्ट की ओर बढ़ने पर जोर देता है, जिसमें नीतियों को व्यावहारिक बदलावों में बदलना शामिल है।

इस आयोजन का मुख्य सूत्र ,निम्नवत है:- पहला, लोग (People) यानी एआई का समावेशी विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय में उपयोग। दूसरा, ग्रह (Planet) यानी पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से लड़ाई और सतत विकास। और तीसरा, प्रगति (Progress) यानी आर्थिक विकास, उत्पादकता वृद्धि और नवाचार को बढ़ावा। इसके दृष्टिगत ही प्रमुख सत्र और चक्र को निर्धारित किया गया है।

एआई इम्पैक्ट समिट को सात 'चक्रों' (फोकस एरियाज) में बांटा गया है, जो कार्यशालाओं, पैनल चर्चाओं और उच्च-स्तरीय बैठकों के रूप में आयोजित होंगे। पहला, डेमोक्रेटाइजिंग AI रिसोर्सेज यानी सार्वजनिक AI संसाधनों को किफायती बनाना (भारत, मिस्र, केन्या सह-अध्यक्ष)। दूसरा, वैश्विक प्रभाव चुनौतियां यानी समावेशी AI नवाचारों को प्रोत्साहन। तीसरा, अन्य सत्र जैसे वैज्ञानिक शोध में AI (डॉ. अर्चना शर्मा जैसे विशेषज्ञ), उद्योग नेताओं के साथ नीति चर्चा, और टेक दिग्गजों की भागीदारी।

जहां तक इसके अपेक्षित परिणाम की बात है तो ये सत्र 100+ देशों के नेताओं, वैज्ञानिकों और उद्योगपतियों को जोड़कर वैश्विक AI शासन के मानक स्थापित करेंगे। यह समिट 16-20 फरवरी को नई दिल्ली में चल रहा है, जो ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं को मजबूत करेगा।

दरअसल एआई इम्पैक्ट समिट 2026 से अपेक्षित प्रमुख परिणाम जिम्मेदार AI के वैश्विक मानकों को मजबूत करना और ग्लोबल साउथ के लिए समावेशी विकास को बढ़ावा देना हैं। यह समिट मापने योग्य प्रभावों पर केंद्रित है, जैसे AI संसाधनों का लोकतंत्रीकरण और नीतिगत सहमति। इस दौरान नीतिगत समझौते भी होंगे।

इस समिट से AI शासन के लिए सात कार्य समूहों (चक्रों) के माध्यम से ठोस प्रतिबद्धताएं अपेक्षित हैं, जिनमें डेमोक्रेटाइजिंग AI रिसोर्सेज और सुरक्षित AI पर फोकस शामिल है। वास्तव में ये समझौते स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में AI अनुप्रयोगों का विस्तार सुनिश्चित करेंगे। जहां तक इसके आर्थिक-सामाजिक प्रभाव की बात है तो वैश्विक दक्षिण में कौशल विकास, सतत AI समाधान और समावेशी नवाचारों को प्रोत्साहन मिलेगा, जो असमानताओं को कम करेगा। भारत के नेतृत्व में 100+ देशों की भागीदारी से आर्थिक कूटनीति मजबूत होगी। इसके दीर्घकालिक परिणाम भी सकारात्मक मिलेंगे।

वास्तव में यह समिट AI एक्शन प्लान और अगले वैश्विक शिखरों की नींव रखेगा, जो पर्यावरण संरक्षण (Planet) और प्रगति (Progress) को जोड़ेगा। कुल मिलाकर, यह AI को व्यापक लाभ पहुंचाने वाली तकनीक के रूप में स्थापित करेगा।

अभियान

अनंत ब्रह्मांड के अधिपति महादेव: सृष्टि, चेतना और परम सत्य के सर्वोच्च स्वरूप की दिव्य गाथा

जब इस ब्रह्मांड के आरंभ और अंत की चर्चा होती है, जब जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझने का प्रयास किया जाता है, तब एक ही नाम सबसे पहले स्मरण में आता है—महादेव। भगवान शिव केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं उस चेतना का प्रतीक हैं, जिससे संपूर्ण सृष्टि संचालित होती है। वे समय से परे हैं, वे जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्त हैं, और यही कारण है कि उन्हें अनादि और अनंत कहा जाता है। वे सृष्टि के आरंभ से पहले भी विद्यमान थे और सृष्टि के अंत के बाद भी रहेंगे। वे ही वह परम ऊर्जा हैं, जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और अंततः उसी में विलीन हो जाता है।

भगवान शिव का स्वरूप जितना सरल है, उतना ही गहन और रहस्यमय भी है। वे राजसी आभूषणों से सुसज्जित नहीं होते, बल्कि भस्म को अपने शरीर पर धारण करते हैं। वे स्वर्ण सिंहासन पर नहीं, बल्कि पर्वतों की नीरवता में निवास करते हैं। उनके गले में सर्प है, जटाओं में गंगा विराजमान हैं और उनके मस्तक पर अर्धचंद्र सुशोभित है। यह स्वरूप केवल एक बाहरी चित्रण नहीं, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक संदेश है। भस्म इस सत्य का प्रतीक है कि संसार की हर वस्तु नश्वर है। सर्प यह दर्शाता है कि भय पर विजय प्राप्त करना ही सच्ची शक्ति है। जटाओं में प्रवाहित गंगा यह संकेत देती है कि शिव वह चेतना हैं, जो जीवन को प्रवाहित करती है, और अर्धचंद्र यह दर्शाता है कि वे समय और प्रकृति के भी स्वामी हैं।

भगवान शिव को महादेव इसलिए कहा जाता है, क्योंकि वे देवताओं के भी देवता हैं। वे सृष्टि के रक्षक, पालक और संहारक हैं। उनका संहार विनाश नहीं, बल्कि परिवर्तन का प्रतीक है। जब संसार में अधर्म, अराजकता और नकारात्मकता बढ़ जाती है, तब शिव का रुद्र रूप प्रकट होता है, जो उस नकारात्मकता का अंत करके संतुलन स्थापित करता है। इस प्रकार उनका संहार भी सृजन का मार्ग प्रशस्त करता है। यही कारण है कि शिव को परिवर्तन और पुनर्जन्म का देवता भी कहा जाता है। भगवान शिव का सबसे महान गुण उनका त्याग और करुणा है। जब समुद्र मंथन हुआ और उसमें से हलाहल विष निकला, तो वह विष इतना घातक था कि पूरा ब्रह्मांड नष्ट हो सकता था। उस समय कोई भी उस विष को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। तब शिव ने बिना किसी संकोच के उस विष को अपने कंठ में धारण कर लिया, जिससे उनका कंठ नीला हो गया और वे नीलकंठ कहलाए। यह घटना केवल एक कथा नहीं, बल्कि यह त्याग, बलिदान और करुणा का सर्वोच्च उदाहरण है। यह हमें यह सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो दूसरों की रक्षा के लिए स्वयं कष्ट सहन करने को तैयार हो। भगवान शिव का एक और अद्भुत पक्ष उनकी निष्पक्षता है। वे किसी में भेदभाव नहीं करते। चाहे देवता हों या असुर, मानव हों या पशु, जो भी सच्चे मन से उनकी आराधना करता है, वे उसे आशीर्वाद प्रदान करते हैं। उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए न तो वैभव की आवश्यकता होती है और न ही किसी विशेष विधि की। केवल सच्ची भक्ति और समर्पण ही उन्हें प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त है। यही कारण है कि उन्हें भोलेनाथ कहा जाता है, क्योंकि वे अपने भक्तों की सच्ची भावना को देखकर तुरंत प्रसन्न हो जाते हैं।

भगवान शिव का परिवार भी जीवन के गहरे सत्य का प्रतीक है। उनकी अर्धांगिनी माता पार्वती शक्ति का स्वरूप हैं, जो सृजन और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके पुत्र भगवान गणेश बुद्धि, विवेक और शुभारंभ के देवता हैं, जबकि कार्तिकेय साहस, शक्ति और युद्ध कौशल के प्रतीक हैं। उनका वाहन नंदी धर्म, निष्ठा और समर्पण का प्रतीक है। यह पूरा परिवार हमें यह सिखाता है कि जीवन में शक्ति, बुद्धि, साहस और धर्म का संतुलन ही सफलता और शांति का आधार है।

भगवान शिव का निवास स्थान कैलाश पर्वत को माना जाता है, जो आध्यात्मिक चेतना की सर्वोच्च अवस्था का प्रतीक है। यह स्थान केवल एक भौतिक पर्वत नहीं, बल्कि यह उस आंतरिक यात्रा का प्रतीक है, जहां पहुंचकर मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान सकता है। इसी प्रकार काशी को उनका प्रिय धाम माना जाता है, जहां मृत्यु भी मोक्ष का द्वार बन जाती है। यह विश्वास इस सत्य को दर्शाता है कि शिव केवल जीवन के ही नहीं, बल्कि मृत्यु के भी स्वामी हैं, और उनके सान्निध्य में मृत्यु भी एक नई शुरुआत बन जाती है।

भगवान शिव का तांडव नृत्य भी उनके सर्वोच्च स्वरूप का प्रतीक है। उनका तांडव केवल एक नृत्य नहीं, बल्कि यह सृष्टि के निर्माण, संरक्षण और संहार का प्रतीक है। जब वे तांडव करते हैं, तब वह संपूर्ण ब्रह्मांड की ऊर्जा का प्रकटीकरण होता है। उनके डमरू की ध्वनि से ही ध्वनि, भाषा और ज्ञान की उत्पत्ति मानी जाती है। यह दर्शाता है कि शिव केवल भौतिक संसार के ही नहीं, बल्कि ज्ञान, कला और चेतना के भी मूल स्रोत हैं।

भगवान शिव की उपासना का सबसे महत्वपूर्ण स्वरूप शिवलिंग है। शिवलिंग निराकार और साकार के बीच का सेतु है। यह सृष्टि की अनंत ऊर्जा और चेतना का प्रतीक है। यह हमें यह सिखाता है कि परम सत्य किसी एक रूप में सीमित नहीं है, बल्कि वह हर रूप में विद्यमान है। शिवलिंग की पूजा हमें यह स्मरण कराती है कि हम सभी उसी परम चेतना का हिस्सा हैं और हमारा अंतिम लक्ष्य उसी चेतना में विलीन होना है।

भगवान शिव का जीवन हमें वैराग्य और आत्मज्ञान का मार्ग भी दिखाता है। वे हमें यह सिखाते हैं कि भौतिक संसार की वस्तुएं अस्थायी हैं और सच्ची शांति केवल आत्मज्ञान में ही प्राप्त हो सकती है। जब मनुष्य अपने अहंकार, इच्छाओं और भय से मुक्त हो जाता है, तब वह अपने भीतर की दिव्यता को पहचान सकता है। यही आत्मज्ञान का मार्ग है और यही शिव का वास्तविक संदेश है।

भगवान शिव केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे जीवन के गहरे दार्शनिक सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे हमें यह सिखाते हैं कि सच्ची शक्ति बाहरी संसार में नहीं, बल्कि हमारे भीतर है। जब हम अपने भीतर की चेतना को जागृत करते हैं, तब हम अपने जीवन को अर्थपूर्ण और सफल बना सकते हैं।

इसीलिए भगवान शिव को सर्वोच्च शक्ति कहा जाता है। वे केवल देवताओं के देवता नहीं, बल्कि वे स्वयं उस चेतना के स्वरूप हैं, जिससे यह संपूर्ण ब्रह्मांड संचालित होता है। वे हर कण में विद्यमान हैं, हर आत्मा में उपस्थित हैं। उनकी उपासना केवल पूजा नहीं, बल्कि आत्मज्ञान की यात्रा है। जब मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है, तब वह जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है और वही अवस्था शिवत्व की प्राप्ति कहलाती है। यही शिव का सबसे बड़ा रहस्य है और यही उनकी सर्वोच्च महिमा है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

भय से विश्वास तक: पहलगाम हमले के बाद फिर से मुस्कुराने लगे कश्मीर के पर्यटन स्थल

(जीएनएस)। कश्मीर की वादियों में एक बार फिर जीवन की हलचल लौटने लगी है। लंबे समय तक भय और सन्नाटे की छाया में रहे पर्यटन स्थलों ने अब धीरे-धीरे अपनी खोई हुई रौनक वापस पाना शुरू कर दिया है। पिछले वर्ष अप्रैल में हुए पहलगाम आतंकी हमले के बाद सुरक्षा कारणों से बंद किए गए 14 पर्यटन स्थलों को दोबारा खोलने का फैसला प्रशासन द्वारा लिया गया है। यह निर्णय न केवल पर्यटन उद्योग के लिए राहत लेकर आया है, बल्कि यह कश्मीर की अर्थव्यवस्था और यहां के लोगों के मन में फिर से विश्वास और उम्मीद जगाने का प्रतीक भी बन गया है।
इस फैसले की घोषणा उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के नेतृत्व में की गई, जिन्होंने सुरक्षा की व्यापक समीक्षा के बाद इन स्थलों को पुनः खोलने का आदेश दिया।
22 अप्रैल को हुए उस आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया था। इस हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी, जिनमें अधिकांश पर्यटक थे, जो अपनी जिंदगी के खूबसूरत पलों को कश्मीर की वादियों में बिताने आए थे। इस घटना के बाद न केवल सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ गई थी, बल्कि पर्यटन उद्योग भी गहरे संकट में आ गया था। एहतियात के तौर पर कई प्रमुख पर्यटन स्थलों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया था, जिससे पर्यटकों की आवाजाही लगभग ठप हो गई थी और स्थानीय लोगों की आजीविका पर भी गहरा असर पड़ा था।
अब जब इन 14 स्थलों को दोबारा खोल दिया गया है, तो इसके साथ ही अब तक कुल 26 पर्यटन स्थल पुनः शुरू हो चुके हैं। प्रशासन का यह कदम केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं है, बल्कि यह एक मजबूत संदेश भी है कि कश्मीर फिर से सुरक्षित है और यहां आने वाले पर्यटकों का स्वागत करने के लिए तैयार है। प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया है कि सभी स्थलों पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए जाएं, ताकि पर्यटक बिना किसी भय के यहां की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकें।

कश्मीर संभाग में जिन प्रमुख स्थलों को फिर से खोला गया है, उनमें यूसमर्ग, दूधपथरी, दांडीपुरा पार्क, पीर की गली, दुबजान, पदपावन, अस्तनपोरा, थजवास हिमनद और गांदेरबल का हंग पार्क शामिल हैं। इसके अलावा ट्यूलिप उद्यान भी पर्यटकों के लिए फिर से खोल दिया गया है, जो हर साल अपनी रंग-बिरंगी फूलों की घाटियों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। बारामुला स्थित वुलर झील और वाटलाब जैसे स्थल भी अब पर्यटकों का स्वागत करने के लिए तैयार हैं।
इन स्थलों की प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण पर्यटकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं, जो कश्मीर की पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं।
जम्मू संभाग में भी देवी पिंडी, महू मंगत और मुगल मैदान जैसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को खोल दिया गया है। यह स्थल न केवल प्राकृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी इनका विशेष महत्व है। इन स्थलों के खुलने से स्थानीय पर्यटन को नई गति मिलने की उम्मीद है और इससे हजारों लोगों की आजीविका फिर से पटरी पर लौट सकेगी।
कश्मीर का पर्यटन उद्योग यहां की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। लाखों लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन पर निर्भर हैं। होटल, टैक्सी चालक, गाइड, हस्तशिल्प विक्रेता और छोटे-बड़े व्यापारी सभी इस उद्योग से जुड़े हुए हैं। जब पर्यटन स्थल बंद हुए थे, तब इन सभी लोगों की आय लगभग समाप्त हो गई थी और उनके सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया था। अब जब ये स्थल फिर से खुल गए हैं, तो स्थानीय लोगों के चेहरे पर फिर से उम्मीद की मुस्कान लौट आई है।
श्रीनगर और आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले लोग इस फैसले से बेहद खुश हैं। उनका मानना है कि यह कदम न केवल आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह कश्मीर की छवि को भी मजबूत करेगा। लंबे समय से कश्मीर को लेकर जो नकारात्मक धारणा बनी हुई थी, वह अब धीरे-धीरे बदल रही है। पर्यटकों की वापसी से यह संदेश जाएगा कि कश्मीर फिर से सामान्य जीवन की ओर बढ़ रहा है और यहां की वादियां पहले की तरह ही सुरक्षित और आकर्षक हैं।
प्रशासन ने यह भी स्पष्ट किया है कि कुछ स्थल जैसे गुरेज, अथवाटू, बंगस और रामकुंड को बर्फ हटने के बाद ही खोला जाएगा। यह निर्णय सुरक्षा और पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। प्रशासन का कहना है कि इन स्थलों पर भी पूरी तैयारी के बाद ही पर्यटकों को जाने की अनुमति दी जाएगी, ताकि किसी प्रकार की असुविधा या खतरे की स्थिति उत्पन्न न हो।

वडोदरा मंडल द्वारा ड्रोन आधारित लाइव-लाइन OHE मॉनिटरिंग का सफल परीक्षण

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा हाल ही में प्रतापनगर यार्ड में ड्रोन आधारित लाइव-लाइन ओवरहेड इक्विपमेंट (OHE) मॉनिटरिंग एवं निगरानी प्रणाली का सफल परीक्षण किया गया। वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल नेतृत्व में कर्षण वितरण विभाग की यह पहल रेलवे संरक्षा और आधारभूत संरचना की विश्वसनीयता को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस उन्नत ड्रोन प्रणाली के माध्यम से बिना रेल यातायात को प्रभावित किए OHE का निरीक्षण किया जा सकता है। ड्रोन में उच्च गुणवत्ता वाला थर्मल कैमरा भी स्थापित है, जो ओवरहीटिंग, ढीले संपर्क, संरेखण (एलाइनमेंट) में त्रुटि तथा अन्य संभावित तकनीकी खामियों का सटीक पता लगाने में सक्षम है।

इस पहल के बारे में वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (कर्षण वितरण) श्री नलिन लोचन गुप्ता ने बताया कि इस ड्रोन की माइक्रो संचालन सीमा 5 किलोमीटर है और इसका बैटरी बैकअप लगभग 40 मिनट है। इसमें थर्मल कैमरा सहित लाइव-लाइन मॉनिटरिंग थर्मल इमेजिंग तकनीक के उपयोग से उन दोषों की भी समय रहते पहचान की जा सकेगी, जो सामान्य निरीक्षण में दृष्टिगोचर नहीं होते। इससे OHE पेट्रोलिंग की सटीकता और प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
यह पहल पश्चिम रेलवे की उस प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसके अंतर्गत आधुनिक तकनीकों को अपनाकर संरक्षा मानकों को और अधिक सुदृढ़ किया जा रहा है। ड्रोन आधारित मॉनिटरिंग प्रणाली के माध्यम से दोष-मुक्त OHE सुनिश्चित करने, मैनुअल निरीक्षण से जुड़े जोखिम को कम करने तथा परिचालन विश्वसनीयता को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।
वडोदरा मंडल सुरक्षित, कुशल एवं आधुनिक रेल संचालन के लिए निरंतर प्रयासरत है।

भावनगर मंडल से होकर चलने वाली भावनगर-धोला और बोटाद-गांधीग्राम स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु भावनगर मंडल से होकर चलने वाली दो जोड़ी "स्पेशल ट्रेनों" के फेरे विस्तारित किए गए हैं। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः-
1. ट्रेन संख्या 09212/09211 बोटाद-गांधीग्राम-बोटाद दैनिक स्पेशल (अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09211 गांधीग्राम-बोटाद स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09212 बोटाद-गांधीग्राम स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है।
2. ट्रेन संख्या 09529/09530 धोला-भावनगर-धोला दैनिक स्पेशल (अनारक्षित) ट्रेन संख्या 09529 धोला-भावनगर स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09530 भावनगर-धोला स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 कत बढ़ा दिया गया है।

भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान समान सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के बाद आई पहली महाशिवरात्रि पर सोमनाथ धाम में भक्ति एवं सेवा का अनूठा शुभ संयोग रचा

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से हाल ही में मनाए गए सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में देशभर से आए भक्तों-श्रद्धालुओं को सोमनाथ ट्रस्ट ने दिन-रात भंडारा चलाकर भोजन कराया
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मोदी की अध्यक्षता में 'सोमनाथ ट्रस्ट का 'सोमनाथ दादा के दर्शन को आया कोई भक्त भूखा न जाए' ध्येय सोमनाथ स्वाभिमान पर्व उत्सव में निःशुल्क भोजन प्रसाद सेवा के भंडारे से साकार हुआ
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा गिर-सोमनाथ जिला प्रशासन को भंडारे के राशन के एवज में 1.08 करोड़ रुपए का चेक प्रदान किया गया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान समान सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के हाल ही में मनाए गए भव्य उत्सव के बाद की पहली महाशिवरात्रि पर भक्ति एवं सेवा का शुभ संयोग रचा। देश के अस्तित्व तथा गौरव का पर्व और हमारी हजार वर्ष की यात्रा का उत्सव सोमनाथ स्वाभिमान पर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणादायी उपस्थिति में मनाया गया था। इस पर्व में देशभर से विशाल संख्या में श्रद्धालु तथा भक्त सहभागी हुए थे। इतना ही नहीं; देश के कोने-कोने से विशेष ट्रेनों व बसों द्वारा भी श्रद्धालु सोमनाथ पहुँचे थे।
सोमनाथ आए सभी यात्रियों को रेलवे स्टेशन से लेकर मंदिर तक पहुँचने की सभी व्यवस्थाएँ और भोजन प्रसाद की व्यवस्था सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा उदारता के साथ की गई थीं।
1951 में जब सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ, तब नवनिर्मित सोमनाथ मंदिर के समक्ष भक्तों को भोजन प्रसाद परोसने की चुनौती थी। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के साथ सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण को 75 वर्ष भी हुए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चुनौती को अवसर में बदलने की विकसित की गई कार्य संस्कृति सोमनाथ ट्रस्ट ने इस अमृत वर्ष तक शिवभक्तों की दान सेवा तथा जनभागीदारी से चरितार्थ की है।
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाले सोमनाथ ट्रस्ट का 'सोमनाथ दादा के दर्शन को आया कोई भक्त भूखा न जाए' ध्येय भी सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में निःशुल्क भोजन प्रसाद सेवा से साकार हुआ। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर सोमनाथ ट्रस्ट ने गिर-सोमनाथ जिला प्रशासन को आश्वासन दिया था कि चाहे जितनी संख्या में भक्त आएंगे, उनकी भोजन व्यवस्था में कोई कमी नहीं रहेगी। देशभर के भक्तों-श्रद्धालुओं को प्रशासन ने दिन-रात भंडारा चलाकर भोजन प्रसाद प्रदान किया और भक्तों की सुविधा के लिए सेवा की धारा बहाई।
इस भंडारे के राशन के एवज में 1.08 करोड़ रुपए का चेक मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री जे. डी. परमार, सचिव श्री योगेन्द्र देसाई तथा महाप्रबंधक श्री विजयसिंह चावडा ने गिर-सोमनाथ जिला प्रशासन को अर्पित किया।

पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। होली के आगामी त्योहारी मौसम के दौरान यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न गंतव्यों के बीच चल रही विशेष ट्रेनों के फेरों को विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :

1. ट्रेन संख्या 09085/09086 मुंबई सेंट्रल – इंदौर त्रि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09085 मुंबई सेंट्रल – इंदौर स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09086 इंदौर – मुंबई सेंट्रल स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
2. ट्रेन संख्या 09001/09002 मुंबई सेंट्रल – भिवानी द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09001 मुंबई सेंट्रल – भिवानी स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09002 भिवानी – मुंबई सेंट्रल स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
3. ट्रेन संख्या 09049/09050 दादर – भुसावल साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09049 दादर – भुसावल स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09050 भुसावल – दादर स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
4. ट्रेन संख्या 09051/09052 दादर – भुसावल त्रि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09051 दादर – भुसावल स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09052 भुसावल – दादर स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
5. ट्रेन संख्या 09005/09006 बांद्रा टर्मिनस – भिवानी साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09005 बांद्रा टर्मिनस – भिवानी स्पेशल को 25 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09006 भिवानी – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
6. ट्रेन संख्या 09057/09058 सूरत – मंगलुरु द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09057 सूरत – मंगलुरु स्पेशल को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09058 मंगलुरु – सूरत स्पेशल को 30 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
7. ट्रेन संख्या 09211/09212 गांधीग्राम – बोटाद स्पेशल (दैनिक अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09211 गांधीग्राम – बोटाद स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09212 बोटाद – गांधीग्राम दैनिक स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
8. ट्रेन संख्या 09530/09529 भावनगर – धोला स्पेशल (दैनिक अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09530 भावनगर – धोला स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09529 धोला – भावनगर स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
ट्रेन संख्या 09085, 09086, 09001, 09049, 09051, 09005 तथा 09057 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 17.02.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

22 फरवरी से भावनगर टर्मिनस–बीकानेर के बीच साप्ताहिक "सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन" का संचालन, टिकट बुकिंग 17 फरवरी से शुरू

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त यात्री भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर टर्मिनस और बीकानेर के बीच विशेष किराये पर साप्ताहिक "सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन" का संचालन किया जाएगा। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण निम्नानुसार हैः
ट्रेन संख्या 09271/09272 भावनगर टर्मिनस–बीकानेर सुपरफास्ट स्पेशल
ट्रेन संख्या 09271 भावनगर टर्मिनस–बीकानेर सुपरफास्ट स्पेशल
यह ट्रेन 22 फरवरी, 2026 से 29 मार्च, 2026 तक प्रत्येक रविवार को प्रातः 04:25 बजे भावनगर टर्मिनस से प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 01:15 बजे बीकानेर पहुंचेगी।
ट्रेन संख्या 09272 बीकानेर–भावनगर टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल
यह ट्रेन 23 फरवरी, 2026 से 30 मार्च, 2026 तक प्रत्येक सोमवार को बीकानेर से सुबह 09.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 04:35 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सिहोर (गुजरात), धोला, बोटाद, सुरेन्द्रनगर गेट, आम्बली रोड, गांधीनगर कैपिटल, महेसाना जं., पालनपुर जं., आबू रोड, फालना, मारवाड़ जं., पाली मारवाड़, लूनी जं., जोधपुर जं., गोटन, मेड़ता रोड जं., नागौर और नोखा स्टेशनों पर ठहराव करेगी।
इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास तथा जनरल सेकंड क्लास के कोच उपलब्ध होंगे।
बुकिंग जानकारीः
ट्रेन संख्या 09271/09272 की बुकिंग 17 फरवरी, 2026 (मंगलवार) से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

भावनगर मंडल के 04 कर्मचारियों को डीआरएम संरक्षा पुरस्कार से किया गया सम्मानित

(जीएनएस)। भावनगर रेलवे मंडल के मंडल रेल प्रबंधक दिनेश वर्मा ने 16 फरवरी, 2026 (सोमवार) को भावनगर परा स्थित मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में सुरक्षित रेल परिचालन में उत्कृष्ट योगदान के लिए चार कर्मचारियों को डीआरएम संरक्षा पुरस्कार (DRM Safety Award) से सम्मानित किया। इन कर्मचारियों ने जनवरी–फरवरी, 2026 के दौरान सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से संभावित दुर्घटनाओं को रोकने में अहम भूमिका निभाई। सम्मानित कर्मचारियों में कपिल बर्मा (स्टेशन मास्टर–पोरबंदर), राम प्रसाद मीना (कांटेवाला–भावनगर टर्मिनस), राज कुमार (पॉइंटसमैन–सिहोर जंक्शन) तथा राजू शामजी मकवाणा (कांटेवाला–राणावाव) शामिल हैं। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सतर्कता की सराहना करते हुए कहा कि वे सभी अनुकरणीय आदर्श हैं। कर्मचारियों की उच्च स्तर की प्रतिबद्धता एवं समर्पण ने सुरक्षित रेल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सभी को बधाई देते हुए भविष्य में भी उत्कृष्ट कार्य करते रहने हेतु प्रोत्साहित किया।

घटनाओं का संक्षिप्त विवरणः
श्री कपिल बर्मा (स्टेशन मास्टर–पोरबंदर): 15.01.2026 को राणावाव स्टेशन पर गाड़ी संख्या 59562 पोरबंदर–राजकोट से उतरते समय एक बच्ची का हाथ दरवाजे के हैंडल में फँस गया और वह चलती ट्रेन से लटक गई। श्री बर्मा ने तुरंत दौड़कर साहसिक ढंग से बच्ची को सुरक्षित बचाया।
श्री राम प्रसाद मीना (कांटेवाला–भावनगर टर्मिनस): 23.01.2026 को पटरी पर असामान्यता देख गाड़ी संख्या 12971 को लाल झंडी दिखाकर रोका। जांच में रेल फ्रैक्चर पाया गया, जिससे संभावित दुर्घटना टल सकी।
श्री राज कुमार (पॉइंटसमैन–सिहोर जंक्शन): 08.02.2026 को प्लेटफॉर्म पर आती ट्रेन संख्या 59229 से उतरते समय गिरी युवती को त्वरित कार्रवाई से बचाया। पूरी घटना सीसीटीवी में दर्ज हुई।
श्री राजू शामजी मकवाणा (कांटेवाला–राणावाव): 27.01.2026 को वीरपुर स्टेशन पर लाइन संख्या 01 में रेल फ्रैक्चर देखकर तुरंत स्टेशन मास्टर को सूचना दी, जिससे समय रहते मरम्मत कर गंभीर दुर्घटना टाली जा सकी।
पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल सभी सम्मानित कर्मचारियों की त्वरित सोच, साहस एवं सतर्कता की सराहना करता है, जिनके प्रयासों से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई और संभावित दुर्घटनाओं को रोका जा सका।

पश्चिम रेलवे

इंजीनियरिंग विभाग ई-टेंडरिंग

संख्याW/623/5/1/NIT DATE - 13/02/2026, मंडल रेल प्रबंधक मंडल कार्यालय कार्य लेखा शाखा पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए खुली निविदा के माध्यम से वेबसाइट www.ireps.gov.in पर आमंत्रित करते हैं विवरण इस प्रकार है: **क्र. संख्या 1- ई-टेंडरिंग सं.: RTM-2025-26-154R. कार्य का नाम:** 1. Barlai Additional common loop line at in connection of Simhastha 2028. 2. Pingleshwar - Emergency X-Over in connection of Simhasth-2028. 3. Tajpur - Additional loop line at in connection of Simhastha 2028. 4. Naikheri - Yard Remodeling with additional loop and stabling line in connection of Simhastha 2028. **अनुमानित लागत:** ₹ 12,52,87,811.10 **बयाना राशि:** ₹ 7,76,500.00 **कार्य की समापन अवधि:** 18 Months. **Similar type of work:** As per Special Technical Criteria enclosed in Tender Schedule. **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि:** 13/02/2026 **निविदा खुलने की तिथि:** 11/03/2026. **क्र. संख्या 2 - ई-टेंडरिंग सं.: RTM-2025-26-188. Name of Work:** Unhel Station - Providing Machine siding with allied facilities. **अनुमानित लागत:** ₹ 2,62,72,398.07 **बयाना राशि:** ₹ 2,81,400.00 **कार्य की समापन अवधि:** 12 Months. **Similar type of work:** Any civil Engineering work. **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि:** 13/02/2026 **निविदा खुलने की तिथि:** 11/03/2026. **क्र. संख्या 3 - ई-टेंडरिंग सं.: RTM-2025-26-189. कार्य का नाम:** NAGDA-BHOPAL, UJJAIN-DEWAS section- Pre & post tamping track measurement survey using Timble Gedo Vorsys trolley system in the jurisdiction of Divisional Engineer (East) Ratlam. **अनुमानित लागत:** ₹ 72,06,205.69 **बयाना राशि:** ₹ 1,44,100.00 **कार्य की समापन अवधि:** 12 Months. **Similar type of work:** As per Special Technical Criteria enclosed in Tender Schedule. **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि:** 13/02/2026 **निविदा खुलने की तिथि:** 11/03/2026. विस्तृत निविदा सूचना, अर्हता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध हैं.

V/460

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly • हमें फोलो करें : x.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

इंजीनियरिंग विभाग ई-टेंडरिंग

संख्या W/623/5/3/NIT DATE - 13/02/2026, मंडल रेल प्रबंधक मंडल कार्यालय कार्य लेखा शाखा पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए खुली निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते हैं विवरण इस प्रकार है: **क्र. संख्या 1 - ई-टेंडरिंग: RTM-2025-26-191. कार्य का नाम:** GDA-NAD section - Annual Repair and Maintenance of Bridges in ADEN(South) DHD section (For two Year). **अनुमानित मात्रा:** As per tender schedule. **अनुमानित लागत:** ₹ 1,99,57,489.00 **बयाना राशि:** ₹ 2,49,800.00 **कार्य समापन अवधि:** 24 Months. **Similar type of work:** Any civil Engineering work. **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि:** 13/02/2026 **निविदा खुलने की तिथि:** 09/03/2026. **क्र. संख्या 2 - E-ई-टेंडरिंग: RTM-2025-26-192. कार्य का नाम:** GDA-NAD section - Annual Repair and Maintenance of Bridges in ADEN(East) RTM section (For two Year). **अनुमानित मात्रा:** As per tender schedule. **अनुमानित लागत:** ₹ 2,43,57,050.00 **बयाना राशि:** ₹ 2,71,800.00 **कार्य समापन अवधि:** 24 Months. **Similar type of work:** Any civil Engineering work. **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि:** 13/02/2026 **निविदा खुलने की तिथि:** 09/03/2026. विस्तृत निविदा सूचना, अर्हता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध हैं.

V/459

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly • हमें फोलो करें : x.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

ई-नीलामी सूचना

वरिष्ठ मंडल विद्युत् इंजीनियर, कर्षण वितरण, रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु IREPS पोर्टल के माध्यम से खुली निविदाएं आमंत्रित करते हैं: **निविदा क्रमांक: EL/TRD/58/2x25/EPC-PSI/01. कार्य का नाम:** Design, Supply, Erection, Testing and Commissioning of 132/55KV Scott Connected Traction Substation and Switching Posts for 2x25KV feeding system between Godhra-Ratlam section of Ratlam Division of Western Railway. **अनुमानित लागत:** ₹ 146,06,00,000/- **बयाना राशि:** ₹ 74,53,000/- **समापन अवधि:** 24 Months. **निविदा दस्तावेज़ की राशि:** Nil, **ऑनलाइन बिडिंग बंद होने की दिनांक एवं समय:** 02/03/2026 upto 15:00 hrs की जगह 12/03/2026 upto 15:00hrs. **तकनीकी बोलियां खोलने की की दिनांक एवं समय:** 13/03/2026 upto 15:30 hrs की जगह 24/03/2026 upto 15:30 hrs. **ऑफर की वैधता:** 180 days from the date of opening. **वेबसाइट: www.ireps.gov.in. नोटिस बोर्ड:** वरिष्ठ मंडल विद्युत् इंजीनियर, कर्षण वितरण, रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे के कार्यालय के प्रवेश द्वार के सामने.

V/461

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे तीन जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे बढ़ाएगा

ट्रेन नं.	से	को	सेवा की तिथि	तक बढ़ाया गया
09451	गांधीधाम	भागलपुर	साप्ताहिक	27/03/2026
09452	भागलपुर	गांधीधाम	साप्ताहिक	30/03/2026
09211	गांधीग्राम	बोटाद	दैनिक	31/03/2026
09212	बोटाद	गांधीग्राम	दैनिक	31/03/2026
09529	धोला	भावनगर	दैनिक	31/03/2026
09530	भावनगर	धोला	दैनिक	31/03/2026

ट्रेनों के ठहराव के समय एवं संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

ट्रेन नंबर 09451 के बढ़े हुए ट्रिप के लिए बुकिंग 17/02/2026 से सभी PRS काउंटर और IRCTC वेबसाइट पर शुरू होगी। ऊपर बताई गई ट्रेन स्पेशल ट्रेन के तौर पर स्पेशल किराए पर चलेगी।

ट्रेन नंबर 09211, 09212, 09529 और 09530 अनारक्षित ट्रेनें हैं।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक करें और फॉलो करें:
facebook.com/WesternRly
X.com/WesternRly
Instagram.com/WesternRly
https://www.youtube.com/@WesternRly
https://bit.ly/WesternRailwayOfficial

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के साथ अपना वास्तविक पहचान पत्र भी साथ रखें

અમદાવાદ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન
નોટીસ

અમદાવાદ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનની ગુરૂવાર તા.૧૯-૦૨-૨૦૨૬ના રોજ સવારના ૦૯-૩૦ વાગે મ્યુ.કમ્પાઉન્ડમાં છઠ્ઠા માળે આવેલ "મહાત્મા ગાંધી હોલ" માં મળનારી ખાસ સભામાં :-

કામ નં.૧
નગર પ્રાથમિક શિક્ષણ સમિતિ અમદાવાદને સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ માટે ગ્રાન્ટ આપવાના કામ વેળાએ શ્રી જગદીશભાઈ ખીમજીભાઈ રાઠોડ, શ્રી અકબરભાઈ હુસેનભાઈ ભટ્ટીના ટેકા સાથે દરખાસ્ત(સુધારો) રજુ કરશે.

કામ નં.૨
શેઠ મા.જે. પુસ્તકાલયને સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ માટે ગ્રાન્ટ આપવાના કામ વેળાએ શ્રી કમળાબેન કુબેરભાઈ ચૌહાણ, શ્રી રમીલાબેન સુરેશભાઈ પરમારના ટેકા સાથે દરખાસ્ત(સુધારો) રજુ કરશે.

કામ નં.૩
શેઠ વા.સા. જનરલ હોસ્પિટલ, શેઠ ચિનાઈ પ્રસુતિગૃહ અને શેઠ કનૈયાલાલ મોતીલાલ સ્કુલ ઓફ પોસ્ટ ગ્રેજ્યુએટ મેડિસીન અને રીસર્ચને સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ માટે ગ્રાન્ટ આપવાના કામ વેળાએ શ્રી રાજશ્રી વિજયકુમાર કેસરી, શ્રી માધુરી ધ્રુવ કલાપીના ટેકા સાથે દરખાસ્ત(સુધારો) રજુ કરશે.

કામ નં.૪
અ.મ્યુ.ટ્રા.સ.ના સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના એસ્ટીમેટ-"બી" અંગેના કામ વેળાએ શ્રી જગદીશભાઈ ખીમજીભાઈ રાઠોડ, શ્રી ઈમ્તીયાઝહુસેન ગુલામહુસેન શેખના ટેકા સાથે દરખાસ્ત(સુધારો) રજુ કરશે.

કામ નં.૫
અ.મ્યુ.કોર્પો.ના સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના બજેટ અંદાજપત્ર-"એ" અંગેના કામ વેળાએ શ્રી શેહઝાદખાન નાસિરખાન પઠાણ, શ્રી નીરવ સુરેન્દ્રકુમાર બક્ષીના ટેકા સાથે દરખાસ્ત(સુધારો) રજુ કરશે.

સરદાર પટેલ ભવન,
મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન,
અમદાવાદ તા.૧૬-૦૨-૨૦૨૬

મેયરશ્રીના હુકમથી,
સહી : અરૂણ આર. પંડયા
મ્યુનિસિપલ સેક્રેટરી

लोकतंत्र की नई दिशा: पूर्णेश मोदी बने गुजरात विधानसभा के उपाध्यक्ष, सूरत में जश्न और गर्व का माहौल

(जीएनएस)। गुजरात की राजनीति में एक महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण अध्याय जुड़ गया है, जब सूरत पश्चिम से विधायक और वरिष्ठ भाजपा नेता पूर्णेश मोदी को गुजरात विधानसभा का नया उपाध्यक्ष (डिप्टी स्पीकर) चुना गया। इस ऐतिहासिक जीत के साथ ही सूरत शहर में खुशी, गर्व और उत्साह की लहर दौड़ गई। राजनीतिक गलियारों से लेकर आम नागरिकों तक, हर जगह इस उपलब्धि की चर्चा होने लगी। यह केवल एक संवैधानिक पद की नियुक्ति नहीं है, बल्कि यह अनुभव, नेतृत्व क्षमता और संगठन के प्रति समर्पण की जीत के रूप में भी देखा जा रहा है।

इस पद को लेकर लंबे समय से चल रहा सस्पेंस आखिरकार खत्म हुआ, जब विधानसभा में मतदान के बाद पूर्णेश मोदी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। सत्ताधारी दल भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें अपना उम्मीदवार बनाया था, जबकि विपक्ष की ओर से कांग्रेस के उम्मीदवार शैलेश परमार मैदान में थे। विधानसभा में संख्या बल और सहयोगी विधायकों के समर्थन के कारण पूर्णेश मोदी की जीत लगभग तय मानी जा रही थी, और अंततः वही हुआ। मतदान के परिणाम घोषित होते ही विधानसभा में तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी और सूरत सहित पूरे गुजरात में भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने इस जीत का जोरदार स्वागत किया।

पूर्णेश मोदी की इस सफलता के पीछे उनका लंबा और प्रभावशाली राजनीतिक अनुभव है। वे न केवल एक लोकप्रिय जनप्रतिनिधि रहे हैं, बल्कि उन्होंने राज्य सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालयों का सफलतापूर्वक संचालन भी किया है। पूर्व में वे सड़क एवं भवन विभाग और नागरिक उड्डयन जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों के

कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। इन विभागों में उनके कार्यकाल के दौरान कई बड़े विकास कार्यों को गति मिली और प्रशासनिक सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू किया गया। उनके नेतृत्व में बुनियादी ढांचे के विकास और प्रशासनिक दक्षता में उल्लेखनीय सुधार हुआ, जिससे उनकी कार्यशैली और क्षमता पर पार्टी और जनता दोनों का विश्वास और मजबूत हुआ।

पूर्णेश मोदी की पहचान एक ऐसे नेता के रूप में रही है, जो संगठन और प्रशासन दोनों में संतुलन बनाए रखने की क्षमता रखते हैं। वे विधानसभा की कार्यप्रणाली, नियमों और संसदीय परंपराओं की गहरी समझ रखते हैं। यही कारण है कि उन्हें इस महत्वपूर्ण संवैधानिक पद के लिए सबसे उपयुक्त उम्मीदवार माना गया। उपाध्यक्ष का पद केवल औपचारिक नहीं होता, बल्कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण स्तंभ होता है। विधानसभा अध्यक्ष की अनुपस्थिति में सदन के संचालन की पूरी जिम्मेदारी उपाध्यक्ष पर होती है। ऐसे में यह पद अत्यंत संवेदनशील और जिम्मेदारी से भरा होता है।

यह पद पिछले कुछ समय से रिक्त था। पूर्व उपाध्यक्ष जेठा भरवाड़ के इस्तीफे के बाद यह संवैधानिक पद खाली पड़ा था, जिससे विधानसभा की कार्यप्रणाली पर भी प्रभाव पड़ रहा था। अब पूर्णेश मोदी के चयन से इस रिक्तता की पूर्ति हो गई है और विधानसभा को एक अनुभवी और सक्षम नेतृत्व मिल गया है। उनके चयन से यह उम्मीद जताई जा रही है कि सदन की कार्यवाही अधिक प्रभावी, संतुलित और व्यवस्थित तरीके से संचालित होगी।

पूर्णेश मोदी की जीत केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं है, बल्कि यह सूरत शहर के लिए भी एक गौरव का क्षण है। सूरत, जो पहले से ही व्यापार, उद्योग और विकास के लिए जाना जाता है, अब राजनीतिक नेतृत्व के क्षेत्र में भी अपनी मजबूत पहचान बना रहा है। सूरत के नागरिकों और भाजपा कार्यकर्ताओं ने इस जीत को अपने शहर की प्रतिष्ठा और सम्मान से जोड़कर देखा है। शहर के विभिन्न हिस्सों में कार्यकर्ताओं ने मिठाइयां बांटी, पटाखे जलाए और एक-दूसरे को बधाई दी। यह उत्साह इस बात का प्रतीक है कि पूर्णेश मोदी की लोकप्रियता और प्रभाव केवल विधानसभा तक सीमित नहीं है, बल्कि जनता के दिलों में भी उनकी गहरी जगह है।

पूर्णेश मोदी की राजनीतिक यात्रा संघर्ष, समर्पण और निरंतर सेवा का उदाहरण रही है। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना किया, लेकिन हर बार अपने अनुभव और नेतृत्व क्षमता से उन्हें सफलतापूर्वक पार किया। उनकी कार्यशैली में अनुशासन, पारदर्शिता और जनसेवा की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यही गुण उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाते हैं और यही कारण है कि पार्टी नेतृत्व ने उन पर भरोसा जताया।

उनकी नियुक्ति से विधानसभा में सकारात्मक बदलाव की उम्मीद की जा रही है। एक उपाध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका केवल सदन का संचालन करना नहीं होगी, बल्कि वे लोकतांत्रिक मूल्यों और संसदीय मर्यादाओं की रक्षा भी करेंगे। वे यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी दलों को अपनी बात रखने का उचित अवसर मिले और सदन की कार्यवाही निष्पक्ष और सुचारू रूप से चले।

इस नियुक्ति का राजनीतिक महत्व भी कम नहीं है। यह भाजपा के संगठनात्मक ढांचे और नेतृत्व की रणनीति को भी दर्शाता है, जिसमें अनुभवी और सक्षम नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी जा रही हैं। इससे पार्टी के भीतर नेतृत्व विकास और संगठनात्मक मजबूती को भी बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, यह संदेश भी जाता है कि पार्टी उन नेताओं को आगे बढ़ाती है, जिन्होंने संगठन और जनता के लिए समर्पण और ईमानदारी से काम किया है।

मौत की फैक्ट्री: भिवाड़ी की अवैध पटाखा इकाई में लगी आग ने सात मजदूरों की जिंदगी छीन ली

(जीएनएस)। राजस्थान के औद्योगिक क्षेत्र भिवाड़ी से आई एक दर्दनाक खबर ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। खैरथल-तिजारा जिले के इस औद्योगिक कस्बे में सोमवार को एक अवैध पटाखा फैक्ट्री में अचानक भीषण आग लग गई, जिसने देखते ही देखते सात मजदूरों की जिंदगी छीन ली। यह हादसा न केवल प्रशासनिक लापरवाही का प्रतीक बन गया है, बल्कि इसने एक बार फिर अवैध फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूरों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इस घटना ने उन परिवारों को हमेशा के लिए उजाड़ दिया, जिनके अपने रोजी-रोटी की तलाश में इस फैक्ट्री में काम करने गए थे।

यह हादसा उस समय हुआ जब फैक्ट्री के अंदर 20 से अधिक मजदूर काम कर रहे थे। पटाखा निर्माण जैसी अत्यंत संवेदनशील और जोखिम भरी प्रक्रिया के दौरान अचानक आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि मजदूरों को संभलने और बाहर निकलने का मौका तक नहीं मिला। कुछ मजदूर किसी तरह अपनी जान बचाने में सफल रहे, लेकिन सात मजदूर आग की लपटों में घिर गए और उनकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। यह दृश्य इतना भयावह था कि मौके पर मौजूद लोग भी स्तब्ध रह गए। भिवाड़ी, जो राजस्थान का एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र माना जाता है, वहां इस तरह की अवैध फैक्ट्री का संचालन होना प्रशासन की निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़ा करता है। पटाखा फैक्ट्री का अवैध रूप से संचालित होना इस बात का संकेत है कि सुरक्षा मानकों और कानूनी प्रक्रियाओं की अनदेखी की जा रही थी। पटाखा निर्माण में उपयोग होने वाले रसायन अत्यंत ज्वलनशील होते हैं और जरा सी चूक भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है। इस फैक्ट्री में भी संभवतः सुरक्षा मानकों का पालन नहीं किया गया, जिसके कारण यह दुर्घटना इतनी भयावह बन गई।

घटना के तुरंत बाद स्थानीय प्रशासन और बचाव दल मौके पर पहुंच गए। अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट सुमित्रा पारीक ने बताया कि बचाव कार्य के दौरान दो गंभीर रूप से घायल मजदूरों को बाहर निकाला गया और उन्हें तुरंत दिल्ली के अस्पताल में भर्ती कराया गया। उनकी हालत अभी भी गंभीर बनी हुई है और डॉक्टर उन्हें बचाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। बचाव दल ने मौके पर आग पर काबू पाने और अन्य मजदूरों को सुरक्षित निकालने के लिए काफी प्रयास किए।

इस घटना की गंभीरता को देखते हुए फॉरेंसिक टीम को भी घटनास्थल पर भेजा गया, जिसने वहां से साक्ष्य एकत्र किए। जांच एजेंसियां अब यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि आग लगने का वास्तविक कारण क्या था। प्रारंभिक आशंका है कि फैक्ट्री में ज्वलनशील पदार्थों के अनुचित भंडारण या निर्माण प्रक्रिया के दौरान हुई किसी तकनीकी चूक के कारण यह हादसा हुआ हो सकता है। हालांकि, वास्तविक कारणों का पता जांच पूरी होने के बाद ही चल पाएगा।

इस दुखद घटना पर देश के शीर्ष नेताओं ने भी गहरा शोक व्यक्त किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस हादसे पर दुख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने यह भी कहा कि प्रशासन को इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए।

सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर फिर सुप्रीम कोर्ट में होगी ऐतिहासिक सुनवाई

(जीएनएस)। केरल स्थित प्रसिद्ध सबरीमाला मंदिर से जुड़े महिलाओं के प्रवेश और धार्मिक अधिकारों के बहुचर्चित मामले में एक बार फिर देश की सर्वोच्च अदालत निर्णायक भूमिका निभाने जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने इस संवेदनशील और संवैधानिक महत्व के मुद्दे पर सुनवाई के लिए नौ न्यायाधीशों की एक बड़ी संविधान पीठ गठित की है, जो 7 अप्रैल से इस मामले की सुनवाई शुरू करेगी। यह सुनवाई न केवल सबरीमाला मंदिर बल्कि पूरे देश में धार्मिक स्थलों पर महिलाओं के अधिकार, समानता और धार्मिक स्वतंत्रता के भविष्य को प्रभावित कर सकती है।

अदालत ने सभी पक्षों को निर्देश दिया है कि वे 14 मार्च तक अपनी लिखित दलीलें जमा करें, ताकि सुनवाई के दौरान सभी संवैधानिक, धार्मिक और सामाजिक पहलुओं पर विस्तार से विचार किया जा सके। इसके बाद अदालत 22 अप्रैल तक इन दलीलों पर अंतिम सुनवाई पूरी करने का लक्ष्य रखती है। यह दर्शाता है कि अदालत इस मामले को अत्यंत गंभीरता और प्राथमिकता के साथ देख रही है।

यह मामला मूल रूप से 2018 के उस ऐतिहासिक फैसले से जुड़ा है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट की पांच न्यायाधीशों की पीठ ने 10 से 50 वर्ष की आयु की महिलाओं

के सबरीमाला मंदिर में प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को असंवैधानिक घोषित कर दिया था। अदालत ने कहा था कि महिलाओं को केवल जैविक कारणों के आधार पर मंदिर में प्रवेश से रोकना समानता और मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। इस फैसले के बाद पूरे देश में व्यापक बहस, विरोध प्रदर्शन और समर्थन दोनों देखने को मिले थे। कई धार्मिक संगठनों और श्रद्धालुओं ने इसे परंपरा और धार्मिक आस्था में हस्तक्षेप बताया, जबकि महिलाओं के अधिकारों के समर्थकों ने इसे ऐतिहासिक और प्रगतिशील निर्णय माना।

अब इस फैसले के खिलाफ दायर पुनर्विचार याचिकाओं और संबंधित संवैधानिक प्रश्नों पर विचार करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने नौ न्यायाधीशों की बड़ी पीठ का गठन किया है। इस पीठ में मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत के साथ न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली सहित अन्य वरिष्ठ न्यायाधीश शामिल हैं। अदालत ने वरिष्ठ वकील परमेश्वर और शिवम सिंह को एमिकस क्यूरी (न्यायालय मित्र) नियुक्त किया है, जिनका कार्य अदालत को निष्पक्ष कानूनी सलाह देना और सभी पक्षों की दलीलों का विश्लेषण प्रस्तुत करना होगा।

इस मामले में केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत को बताया है कि सरकार इस मामले की समीक्षा का समर्थन करती है। इसका मतलब यह है कि अदालत अब इस बात पर विस्तार से विचार करेगी कि धार्मिक परंपराओं और संवैधानिक अधिकारों के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए। अदालत ने सात महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न भी तय किए हैं, जिनमें यह भी शामिल है कि क्या किसी धार्मिक परंपरा को जनहित याचिका के माध्यम से चुनौती दी जा सकती है और धार्मिक स्वतंत्रता का दायरा क्या होना चाहिए। यह मामला केवल सबरीमाला मंदिर तक सीमित नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने इस सुनवाई के दौरान मस्जिदों और दरगाहों में मुस्लिम महिलाओं के प्रवेश तथा पारसी समुदाय के अगियारी (पवित्र अग्नि स्थल) में महिलाओं के प्रवेश जैसे अन्य धार्मिक स्थलों से जुड़े मुद्दों पर भी विचार करने का निर्णय लिया है। इसका अर्थ यह है कि अदालत का अंतिम निर्णय पूरे देश में धार्मिक स्थलों पर महिलाओं के अधिकारों के लिए एक व्यापक कानूनी ढांचा निर्धारित कर सकता है।

इस सुनवाई से पहले राजनीतिक माहौल भी गर्म हो गया है। विपक्षी दलों ने राज्य सरकार से इस मुद्दे पर अपना स्पष्ट रुख बताने की मांग की है। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि सरकार को महिलाओं के अधिकारों के पक्ष में मजबूती से खड़ा होना चाहिए, जबकि सत्तारूढ़ दल का कहना है कि यह मामला अदालत में विचाराधीन है और अदालत के समक्ष ही उनका पक्ष रखा जाएगा। सत्तारूढ़ दल के नेताओं ने यह भी कहा है कि सरकार भक्तों की भावनाओं और संवैधानिक मूल्यों दोनों का सम्मान करेगी।

सबरीमाला मंदिर भगवान अयप्पा को समर्पित है और यह हिंदू धर्म के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। यहां हर वर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। परंपरागत रूप से इस मंदिर में 10 से 50 वर्ष की आयु की महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध था, जिसे भगवान अयप्पा के ब्रह्मचर्य स्वरूप से जोड़ा जाता था। लेकिन 2018 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने इस परंपरा को चुनौती देते हुए समानता और संवैधानिक अधिकारों को प्राथमिकता दी।

अब नौ न्यायाधीशों की यह संविधान पीठ इस जटिल और संवेदनशील मुद्दे पर अंतिम और व्यापक निर्णय देने की दिशा में आगे बढ़ रही है। यह निर्णय केवल एक मंदिर की परंपरा का नहीं, बल्कि भारत के संविधान, धार्मिक स्वतंत्रता, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय के मूल सिद्धांतों का भी परीक्षण होगा। पूरे देश की नजर इस ऐतिहासिक सुनवाई पर टिकी हुई है, क्योंकि इसका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों तक महसूस किया जाएगा और यह तय करेगा कि आधुनिक भारत में परंपरा और संविधान के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाएगा।

गुजरात को मिली नई सौगात: असारवा उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ

(जीएनएस)। भारतीय रेल द्वारा गुजरात में आधुनिक रेल सेवाओं के विस्तार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 16 फरवरी 2026 को असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस सेवा का शुभारंभ किया गया। यह सेवा राज्य में तेज, सुरक्षित एवं विश्वस्तरीय रेल यात्रा के नए आयाम स्थापित करेगी।

हिम्मतनगर स्टेशन पर माननीया सांसद श्रीमती शोभनाबेन बारैया, माननीय सांसद श्री मयंक नायक,माननीया सांसद श्रीमती रमीलाबेन बारा एवं माननीय पूर्व सांसद श्री दीपसिंह राठोड द्वारा उदयपुर–असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

इसी क्रम में असारवा स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में माननीया महापौर, अहमदाबाद श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, माननीय सांसद, श्री दिनेशभाई मकवाना तथा माननीय सांसद (राज्यसभा) श्री नरहरि अमीन द्वारा उदयपुर सिटी-असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर माननीय सांसद श्री दिनेशभाई मकवाना ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार और भारतीय रेल गुजरात में ट्रेन सेवाओं और रेलवे अवसंरचना को उन्नत करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध हैं। वर्तमान में गुजरात में

1,28,748 करोड़ के रेलवे कार्य प्रगति पर हैं और इस वर्ष के बजट में राज्य को रिकॉर्ड 17,366 करोड़ का आवंटन प्राप्त हुआ है। गुजरात के 87 स्टेशनों का पुनर्विकास विश्व-स्तरीय रेलवे स्टेशनों के रूप में किया जा रहा है, जिनमें से 19 स्टेशनों का उद्घाटन हो चुका है। यह दर्शाता है कि गुजरात देश के रेलवे आधुनिकीकरण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर माननीय सांसद श्री नरहरि अमीन ने बताया कि गुजरात से बहुत से लोग शादी के लिए सामूहिक रूप से उदयपुर जाते है उनके के लिए यह ट्रेन वरदान स्वरूप है जो 4 से 4.15 घंटे में असारवा से उदयपुर पहुंचाती है। यह ट्रेन अत्याधुनिक एवं सड़क मार्ग की अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित व आरामदायक है।

यह गुजरात की छठी वंदे भारत ट्रेन है, जो क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने के साथ-साथ यात्री सुविधा, पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देगी। भारतीय रेल अपग्रेड किए गए स्टेशनों, नई रेल लाइनों एवं अत्याधुनिक सुविधाओं के माध्यम से क्षेत्रीय विकास और बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस इसी प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण है।

यह अत्याधुनिक ट्रेन रिक्लाइनिंग एवं आरामदायक सीटों, स्लाइडिंग दरवाजों, मोबाइल चार्जिंग पॉइंट, बायो-टॉयलेट, स्वचालित प्रवेश एवं निकास द्वार तथा सीसीटीवी कैमरों जैसी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। यह ट्रेन यात्रियों को तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा के साथ विश्वस्तरीय आराम का अनुभव प्रदान करेगी।

ट्रेन संचालन विवरण:

ट्रेन संख्या 26964/26963 असारवा–उदयपुर सिटी–असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 26964 असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस 18 फरवरी 2026 से प्रतिदिन (मंगलवार को छोड़कर) असारवा से 17:45 बजे प्रस्थान कर 22:00 बजे उदयपुर सिटी पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 26963 उदयपुर सिटी–असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस 18 फरवरी 2026 से प्रतिदिन (मंगलवार को छोड़कर) उदयपुर सिटी से 06:10 बजे प्रस्थान कर 10:25 बजे असारवा पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, डूंगरपुर एवं जावर स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी चेयर कार एवं एक्जीक्यूटिव चेयर कार सहित कुल 8 कोच रहेंगे।

ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

अप्रैल-जनवरी 2025-26 में निर्यात 6.15 प्रतिशत बढ़ा; ईयू और अमेरिका के साथ एफटीए से नई तेज़ी मिलेगी: फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 16 फरवरी, 2026: फेडरेशन ऑफ़ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइज़ेशन्स (फियो) ने अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान भारत के निर्यात में अच्छी बढ़ोतरी का स्वागत किया है, जो लगातार ग्लोबल अनिश्चितताओं के बीच देश के बाहरी ट्रेड सेक्टर की मज़बूती और लगातार रफ़्तार को दिखाता है। इस दौरान भारत का कुल निर्यात 6.15 प्रतिशत बढ़कर 720.76 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में यह 679.02 बिलियन डॉलर था। वस्तु निर्यात 366.63 बिलियन डॉलर रहा, जो अप्रैल-जनवरी 2024-25 में दर्ज 358.75 बिलियन डॉलर से 2.20 प्रतिशत ज़्यादा है। खास बात यह है कि अकेले जनवरी 2026 में निर्यात काफी बढ़कर 80.45 बिलियन डॉलर हो गया, जो पिछले साल जनवरी में 71.09 बिलियन डॉलर था। यह बाहरी डिमांड में अच्छी रिकवरी और ग्लोबल ट्रेड सेंटिमेंट में सुधार को दिखाता है। फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने कहा कि अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान कुल निर्यात में 6.15 प्रतिशत की बढ़ोतरी भारतीय इंडस्ट्री की अंदरूनी ताकत और कॉम्पिटिटिवनेस का एक पॉजिटिव और भरोसा दिलाने वाला इंडिकेटर है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि यूरोपियन यूनियन और अमेरिका के साथ एफटीए का सफल होना भारत के बदलते ट्रेड आर्किटेक्चर में एक बड़ा बदलाव लाने वाला मील का पत्थर है। चूंकि अमेरिका भारत का टॉप निर्यात गंतव्य बना हुआ है और यूरोप एक बड़ा हाई-वैल्यू मार्केट बना हुआ है, इसलिए इन एग्रीमेंट से भारतीय निर्यात को बेहतर मार्केट एक्सेस, बेहतर टैरिफ कॉम्पिटिटिवनेस और ज़्यादा रेगुलेटरी प्रेडिक्टेबिलिटी मिलने की उम्मीद है। समय पर लागू करने और इंडस्ट्री की प्रोएक्टिव तैयारी के साथ, ये एफटीए आने वाले सालों में भारत के निर्यात ग्रोथ ट्रैजेक्टरी को काफी तेज़ करने के लिए तैयार हैं। श्री रल्हन ने आगे कहा कि इंजीनियरिंग गुड्स, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल और गारमेंट्स, लेदर, जेम्स और ज्वेलरी, एग्रीकल्चर और मरीन प्रोडक्ट्स जैसे खास सेक्टर्स को इन ट्रेड एग्रीमेंट्स से काफी फायदा होने की उम्मीद है। मौजूदा वित्तीय वर्ष में इंजीनियरिंग गुड्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल, जेम्स और ज्वेलरी और एग्रीकल्चर जैसे सेक्टर्स का लगातार परफॉर्मेंस भारत के निर्यात बास्केट के डायवर्सिफिकेशन और ग्लोबल वैल्यू चेन्स में देश के गहरे एकीकरण को दिखाता है।

इम्पोर्ट के मामले में, अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान कुल आयात 6.54 प्रतिशत बढ़कर 823.41 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले साल इसी समय में यह 772.85 बिलियन डॉलर था। वस्तु आयात 7.21 प्रतिशत बढ़कर 649.86 बिलियन डॉलर हो गया, जो अप्रैल-जनवरी 2024-25 में 606.13 बिलियन डॉलर था। जनवरी 2026 में आयात 90.83 बिलियन डॉलर था, जिससे महीने के लिए 10.45 बिलियन डॉलर का व्यापार घाटा हुआ। इस ट्रेंड पर कमेंट करते हुए, श्री रल्हन ने कहा कि आयात में बढ़ोतरी, खासकर पेट्रोलियम, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीनरी और इंडस्ट्रियल रॉ मटीरियल के आयात में बढ़ोतरी, मज़बूत घरेलू डिमांड और सभी सेक्टर में चल रही कैपेसिटी बढ़ाने को दिखाती है। जनवरी में व्यापार घाटा 10.45 बिलियन डॉलर था, लेकिन उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि लगातार निर्यात ग्रोथ और मज़बूत होती इकोनॉमिक फंडामेंटल्स को देखते हुए ओवरऑल ट्रेंड मैनेजेबल बना हुआ है।

अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान निर्यात में मुख्य योगदान देने वालों में इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम प्रोडक्ट, इलेक्ट्रॉनिक सामान, ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स, जेम्स और ज्वेलरी, ऑर्गेनिक और इनऑर्गेनिक केमिकल, सभी तरह के टेक्सटाइल के रेडीमेड गारमेंट, कॉटन यार्न और फैब्रिक, हैंडलूम प्रोडक्ट, चावल और मरीन प्रोडक्ट शामिल थे। भारत के मुख्य निर्यात गंतव्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, चीन, नीदरलैंड्स, ब्रिटेन, जर्मनी, सिंगापुर, बांग्लादेश, सऊदी अरब और इटली बने रहे, जबकि मुख्य इम्पोर्ट सोर्स में चीन, संयुक्त अरब अमीरात, रूस, अमेरिका, सऊदी अरब, इराक, स्विट्ज़रलैंड, हांगकांग, सिंगापुर और जापान शामिल थे।

फियो ने भरोसा जताया कि लगातार पॉलिसी सपोर्ट, नए एफटीए के तहत बेहतर मार्केट एक्सेस और इंडस्ट्री की लगातार मज़बूती के साथ, भारत अपने निर्यात ग्रोथ मोमेंटम को बनाए रखने और ग्लोबल ट्रेड में एक भरोसेमंद और कॉम्पिटिटिव पार्टनर के तौर पर अपनी भूमिका को और मज़बूत करने के लिए अच्छी स्थिति में है।

सोना वायदा गिरकर 1.54 लाख रुपये और चांदी वायदा लुढ़ककर 2.35 लाख रुपये तक पहुँचा: क्रूड ऑयल वायदा में 8 रुपये की नरमी

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 177866.46 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 18323.08 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 159542.02 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 38010 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2304.55 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 13912.42 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 154999 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 155550 रुपये और नीचे में 154125 रुपये पर पहुंचकर, 155895 रुपये के पिछले बंद के सामने 558 रुपये या 0.36 फीसदी औंधकर 155337 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 370 रुपये या 0.29 फीसदी की गिरावट के साथ 126524 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 21 रुपये या 0.13 फीसदी की गिरावट के साथ 15877 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 153200 रुपये के भाव पर खूलकर, 153680 रुपये के दिन के उच्च और 152092 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 400 रुपये या 0.26 फीसदी की गिरावट के साथ 153471 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 154561 रुपये के भाव पर खूलकर, 155900 रुपये के दिन के उच्च और 154401 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 156122 रुपये के पिछले बंद के सामने 472 रुपये या 0.3 फीसदी की गिरावट के साथ 155650 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 238489 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 241452 रुपये और नीचे में 235208 रुपये पर पहुंचकर, 244360 रुपये के पिछले बंद के सामने 3760 रुपये या 1.54 फीसदी घटकर 240600 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 5114 रुपये या 2.05 फीसदी गिरकर 244466 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 5235 रुपये या 2.1

कमोडिटी वायदाओं में 18323.08 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 159542.02 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 13912.42 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38010 पॉइंट के स्तर पर

फीसदी लुढ़ककर 244350 रुपये प्रति किलो बोला गया।

मेटल वर्ग में 2420.51 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 8.4 रुपये या 0.69 फीसदी घटकर 1201.1 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 1.7 रुपये या 0.53 फीसदी गिरकर 321.9 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 45 पैसे या 0.15 फीसदी की नरमी के साथ 308.8 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 70 पैसे या 0.37 फीसदी के सुधार के साथ 188.2 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1897.75 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5705 रुपये के भाव पर खूलकर, 5724 रुपये के दिन के उच्च और 5669 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 8 रुपये या 0.14 फीसदी की गिरावट के साथ 5715 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 6 रुपये या 0.1 फीसदी औंधकर 5716 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 282.4 रुपये के भाव पर खूलकर, 282.4 रुपये के दिन के उच्च और 269.8 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 294.1 रुपये के पिछले बंद के सामने 22.4 रुपये या 7.62 फीसदी की गिरावट के साथ 271.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 22.5 रुपये या 7.65 फीसदी घटकर 271.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 968 रुपये पर खूलकर, 80 पैसे या 0.08 फीसदी टूटकर 965.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 7118.10 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 6794.31 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1979.26 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 162.10 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 30.03 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 239.17 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 624.08 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1256.20 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 1.40 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8912 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 62543 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 32394 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 430514 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 58526 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8303 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19309 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 64523 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 19605 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 24732 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 37700 पॉइंट पर खूलकर, 38122 के उच्च और 37101 के नीचले स्तर को छूकर, 65 पॉइंट घटकर 38010 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 15.3 रुपये की गिरावट के साथ 82.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 15.1 रुपये की गिरावट के साथ 13.55 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 183 रुपये की गिरावट के साथ 491 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 240000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2795 रुपये की गिरावट के साथ 12340.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 5.73 रुपये की गिरावट के साथ 23.53 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 12 पैसे की नरमी के साथ 0.65 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 11 रुपये की गिरावट के साथ 66.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 6.35 रुपये की बढ़त के साथ 11.5 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 50 पैसे के सुधार के साथ 659 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 197.5 रुपये की गिरावट के साथ 1905.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.51 रुपये की बढ़त के साथ 5.86 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 53 पैसे की नरमी के साथ 3.4 रुपये हुआ।